www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 22 जनवरी 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 22 जनवरी 2017 से 28 जनवरी 2017

माघ कृ. – 10 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 55, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर का नवसत्र प्रारम्भ

दिनाँक 2.1.2017 को डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर में नवसत्र एवं नववर्ष के उपलक्ष्य में परमपिता परमात्मा से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सुखार्थ बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। कॉलेज की समृद्ध वैदिक परम्परा के अनुसार 101 बार गायत्री महामन्त्र का ध्वनिनाद किया गया तथा सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित प्राचार्य पोर्च में यज्ञ की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार जी अपने प्राध्यापक एवं कर्मचारी समूह के साथ इस यज्ञ के मुख्ययजमान थे। ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण के मन्त्रों से यज्ञ की कार्यवाही व्याख्या के साथ आचार्य कुलदीप आर्य ने की।

मुख्य यज्ञमान, प्राध्यापकगण एवं कर्मचारी वर्ग ने अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से यज्ञ कुण्ड में आहुतियाँ प्रदान की और नववर्ष के अवसर पर कल्याणकारी, गुण, कर्म और स्वभाव को अपनाने के शुभ संकल्प धारण किये। ईशावास्यमिदं सर्वम्...., कुवन्वेह सभी विभागों के अध्यक्षों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने अपने अपने विभाग में तन, मन, धन से इस नये साल में कार्य करने की प्रेरणा ग्रहण की। आशीर्वाद के उपरान्त महात्मा हंसराज सर्वश्रेष्ठ प्राचार्य सम्मान से सम्मानित कॉलेज प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार ने अपने संदेश में कहा कि महर्षि दयानन्द ने वैदिक परम्परानुसार मानव जीवन का सच्चा रास्ता प्रशस्त करके बहुत ऊँचे आदर्श स्थापित किये हैं। डी.ए.वी. उन्हीं आदर्शों पर आचरण करता है। उन्होंने अपने सन्देश में सभी को कॉलेज के विकास में लगने एवं अहंकार, मद, क्रोध, मोह, आदि दुर्गण छोड़ने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर उन्होंने कॉलेज में हुये नव निर्माण कार्य–विमर्श–संगोष्ठी कक्ष एवम् नये रूप में रूपांरित किये मन्थनम्, आर्ष ऑडिटेरियम, छात्रों के नये अध्ययन कक्ष, जलपान कक्ष तथा अन्य बहुत से सौन्दर्यकरण कार्यों की चर्चा की इसी के साथ उन्होंने कॉलेज के अकादमिक परीक्षा परिणामों, खेल विभाग के कीर्तिमानों, यू.जी.सी. से प्राप्त विभिन्न अनुदानों, प्रोजैक्ट्स् का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर कॉलेज के समस्त प्राध्यापकगण कर्मचारी समूह के साथ वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. विश्वबन्धु, डॉ. डेजीशर्मा, डॉ. दर्शनदीप, डॉ. बी.बी. यादव, डॉ. कमलकिशोर, प्रो. डॉ. कमलकिशोर, प्रो. पोपी, प्रो. अमरदीप आदि उपस्थित थे। यज्ञोपरान्त सभी ने ऋषिलंगर का आनन्द लिया।

डी.ए.वी. द्वारका (दिल्ली) में आयोजित हुआ नेत्र परीक्षण शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल द्वारका (दिल्ली) के प्रांगण में नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर का आयोजन विद्यालय के इंटरैक्ट क्लब ने रोटरी क्लब के सहयोग से किया।

शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को नेत्र विकारों के प्रति जागरूक करना था जिससे वें नेत्र संबंधी अपवर्तक त्रुटियों को आरंभ में ही समझ सकें एवं उनका उचित उपचार हो सके।

इस शिविर को सफल बनाने के लिए इंटरैक्ट क्लब के द्वारा अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। छात्रों ने स्वस्थ आँखों की महत्ता बताते हुए प्रेरक नारे लिखकर सुंदर पोस्टर बनाए। छात्रों को स्वस्थ आँखों के बारे में जागरूक करने के लिए तथा आँखों की बीमारियों को दूर भगाने के लिए क्या आवश्यक कदम उठाए जाएँ इस बात को ध्यान में रखते हुए विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई जिसमें कक्षा आठवीं के एक छात्र ने स्वरचित कविता 'आँखनामा' प्रस्तुत की जिसमें आँखों का दर्द बयाँ किया गया था कि किस तरह हम अपनी आँखों की उपेक्षा करते हैं। तत्पश्चात् एक प्रश्नोत्तरी हुई। छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सही उत्तर बताने वाले छात्र–छात्राओं को पुरस्कार भी दिए गए। विद्यालय की योग शिक्षिका द्वारा आँखों को स्वस्थ रखने के लिए बहुत ही आसान एवं प्रभावशाली व्यायाम (Exercise) बताए गए।

नेत्र शिविर पर सुंदरलाल चैरिटेबल अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञ दल द्वारा 200 से अधिक अभिभावकों एवं छात्रों का विस्तृत रूप से कंप्यूटरीकृत नेत्र परीक्षण किया गया। विशेषज्ञों ने छात्रों को आँखों की नियमित जाँच कराने एवं स्वस्थ रखने के लिए कुछ सुझाव दिए। उन लोगों ने घंटों कंप्यूटर में कार्य करते समय आँखों की सुरक्षा कैसे की जा सकती है इस विषय पर भी छात्रों को विशेष सुझाव दिए।

इस अवसर पर विद्यालय छात्रों द्वारा बनाए रंग–बिरंगे पोस्टरों द्वारा सजा था जिनमें आँखों से ही संबंधित रोचक जानकारियाँ थी। कार्यक्रम की सफलता के लिए विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र रोटरी क्लब के सम्मानित सदस्य श्री वी.के. जैन, श्री वी.के. भाटिया एवम् श्री जे.जी. नंदा जी रहे जिनके सहयोग से विद्यालय इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन कर सका।

डी.ए.वी. सैक्टर-14 गुरुग्राम में आयोजित वार्षिक समारोह

डी.ए.वी. सैक्टर–14, गुरुग्राम में 29 दिसम्बर, 2016 को रंगारंग वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, गुड़गाँव के जिला उपायुक्त एवं नगर निगम आयुक्त, श्री टी.एल. सत्यप्रकाश जी की उपस्थिति ने डी.ए.वी. प्रांगण को गरिमा प्रदान की। डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उपाध्यक्ष तथा विद्यालय के अध्यक्ष श्री प्रबोध महाजन जी तथा विद्यालय के प्रबंधक श्री आर. आर. भल्ला जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा का संवर्धन किया। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा एरी जी ने अपने वक्तव्य में विद्यालय की अनेक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए छात्रों के सार्वभौमिक विकास हेतु पाठ्य सहगामी

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 22 जनवरी 2017 से 28 जनवरी 2017

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति चिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि संन्यास आश्रम अच्छा है, परन्तु अपने समय पर। संन्यास सुखी हो, इसके लिए पहले गृहस्थ को सुखी बनाना चाहिए। यजुर्वेद के 40वें अध्याय में भगवान अपनी अमृतवाणी में कहते हैं "त्याग से भोग कर" अर्थात भोगकर इस संसार को प्रयोग में ला। धन संचय कर, शिशुओं का पालन कर, मकान बना, व्यापार चला, राज्य कर, शक्ति बढ़ा, सम्मान के लिए संघर्ष कर, सबको ग्रहण कर, किन्तु त्याग की भावना से।

धन संचय अवश्य करो, भवन निर्माण करो, सन्तान की रक्षा करो, किन्तु जब विधवाएं पुकार उठें, जब दुःखी जन चिल्ला उठें, जब अनाथों के अश्रुपात हों, जब देश पर धर्म और जाति पर आपत्ति आ जाए, तब वस्तुओं को तुच्छ समझकर त्याग दो। यह है त्याग से भोग करने का अभिप्राय। त्याग से भोग करने की मनोवृत्ति गायत्री मन्त्र और यज्ञ से पैदा होती है।

––अब आगे

एक लाल मिर्च को पुरुष खाये तो सी–सी करने लगता है, किन्तु स्मरण रखो कि केवल एक पुरुष सी–सी करता है। उसी लाल मिर्च को तनिक आग में डालकर देखिये तो क्या होता है? जितने लोग यहाँ बैठे हैं, सब छीं–छीं करने लगेंगे। सबकी आँखों से अश्रुपात होने लगेंगे। इस प्रकार आग में डालने से प्रत्येक वस्तु की शक्ति बढ़ जाती है। इस दृष्टिकोण से यज्ञ का प्रथम लाभ है लोक में। एक छटाँक घी जब आग में पड़ता है तब एक सहस्त्र गुणा हो जाता है; नष्ट नहीं होता। वह मनुष्यों के पास पहुँचता है, देवताओं के पास पहुँचता है। देवता सूर्य, वायु, मेघ, पृथिवी, आकाश, इन्हें जब भोजन मिलता है तब ये बलवान् होकर कार्य करते हैं। आप कहेंगे कि देवताओं को बलवान् बनाने से हमें क्या मिलता है? तो सुनिये! हमारे देश में पृथिवी का क्षेत्रफल 77 करोड़ 30 लाख एकड़ है। इसमें पच्चीस करोड़ एकड़ भूमि पर कृषि होती है। इसमें से चार करोड़ 10 लाख एकड़ भूमि पर नहरों से पानी दिया जाता है। शेष समस्त भू–क्षेत्र भगवान् के भरोसे पर है। वर्षा हो तो इसमें अन्न होता है, न हो तो नहीं होता। समय पर वर्षा हो, यह केवल हमारे देश की नहीं, प्रत्येक देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

यज्ञ का विज्ञान वह विज्ञान है जिसकी सहायता से अपनी इच्छानुसार वर्षा कराई जा सकती है। वर्षा न हो तो यज्ञ करो, वर्षा अवश्य होगी। यज्ञ से बेटा उत्पन्न हो सकता है। जिसके अधिक सन्तान होती हो, उसकी सन्तान का होना भी रुक जाता है। इसलिए यज्ञ को सर्वोत्कृष्ट कर्म कहा गया है।

यज्ञ से बढ़कर और दान नहीं है क्योंकि यज्ञ का भाग केवल मित्रों और सम्बन्धियों को ही नहीं, प्रत्युत शत्रुओं को भी प्राप्त होता है। इससे बड़ा दान और क्या हो सकता है? अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है। जिस देवता के पास भी आप अपनी भेंट पहुँचाना चाहते हैं, अग्नि में डाल दीजिये, वह भेंट उस देवता के पास पहुँच जाएगी। 'ऋग्वेद' के प्रथम मन्त्र में अग्नि को देवताओं को बुलाने वाला पुरोहित और दूत कहा है। सूर्य देवता, चन्द्र देवता, वायु देवता, जल देवता, मेघ देवता, सबका पुरोहित–सबको बुलाने वाला यही अग्नि है। यज्ञ से देवता प्रसन्न होते हैं। वर्षा समय पर होती है। सूर्य ठीक प्रकार से चमकता है। पृथिवी अच्छे अन्न को उत्पन्न करती है; इससे निकलने वाले अन्न में अधिक शक्ति होती है। यह है यज्ञ का वह लाभ जिसका सम्बन्ध इस लोक से–इस संसार से है।

किन्तु यह तो एक लाभ है। दूसरे लाभ का सम्बन्ध परलोक से है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने किये गये प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा– "यज्ञ में आहुति दी जाती है तो उसके दो रूप बन जाते हैं। वह दो भागों में विभक्त हो जाती है। एक रूप वायु, जल, आकाश, पृथिवी को शुद्ध करता है, इन्हें शक्ति प्रदान करता है, मनुष्य के लिए लाभप्रद बना देता है दूसरा भाग मनुष्य के शरीर में प्रवेश करके वहाँ बैठ जाता है। जहाँ सूक्ष्म शरीर का निवास है; और फिर जब जीवन का अन्त होता है, जब सूक्ष्म शरीर में लिपटा हुआ आत्मा इस शरीर से बाहर निकलता है तो आहुतियाँ इस सूक्ष्म शरीर को लपेटकर इसे ऊपर उठाकर उस लोक में ले जाती हैं जिसकी इच्छा से ये डाली गई थीं। इच्छा जितनी

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती पुनर्जागरण के पुरोधा

● जगदीश प्रसाद सिन्हा

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की पुण्य तिथि 30 अक्टूबर 1883 एवं दिन दीपावली का पर्व था। संयोगवश इस वर्ष भी, उनकी पुण्य तिथि 30 अक्टूबर 2016 और दिपावली का ही दिन था। ऐसा अभूतपूर्व अवसर हमारे जीवन में 133 वर्ष बाद घटित हुआ। इस प्रकार इस दिन को आर्य समाज ने अपने संस्थापक को प्रीतिपूर्वक और श्रद्धापूर्वक स्मरण किया।

उनका व्यक्तित्व आर्य समाज के लिए सदैव प्रेरणादायक रहा है, बल्कि उनके विरोधी भी उनकी विद्वता व तर्क सम्मत व्याख्यानों से प्रभावित होते रहे थे। वो ही केवल एक मात्र ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने प्राचीन वैदिक संस्कृति का पुनः जीर्णोद्धार करने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका बचपन से लेकर मोक्ष प्राप्त करने तक का समस्त जीवन संघर्षों से चिह्नित रहा।

स्वामी दयानन्द अद्वितीय दूरदर्शी थे। वे ईश्वरीय गुणों से युक्त थे। वह भारत के अतीत गौरव को तथा वेदों की भूली हुई दिव्य पुस्तकों में निहित ज्ञान को उजागर करने के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित हुये।

महर्षि ने शताब्दियों से चली आ रही भारत की पराधीनता व लोगों पर दमनकारी, शत्रुतापुर्ण व्यवहार के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया। उन्होंने देश के सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्यों के पतन को समाप्त करने की प्रतिज्ञा ली। उन्होंने बहुआयामी मोर्चा स्थापित कर, अशिक्षा, अस्पृश्यता–उन्मूलन, नारी–जागरण गहरी अज्ञानता और पिछड़ेपन के उत्थान के लिये उल्लेखनीय प्रयास किया। अपनी सारी शक्ति देश की समृद्ध धरोहर, जो विनाश के कगार पर थी, को बचाने के प्रयासों में केन्द्रित कर दी।

मध्य 19वीं शताब्दी में अंग्रेजी शासन की स्थापना पूर्ण रूप में स्थिर हो चुकी थी। स्वामी जी ने अपना लक्ष्य लोगों की तरक्की, धर्मोपदेशों, सार्वजनिक शास्त्रार्थों, गुलामी, अशिक्षा, अस्पृश्यता और धार्मिक स्वाभिमानता में बन्धनमुक्त कराने का रखा। उन्होंने बिना वादविवाद के मूर्ति पूजन और ऐसी ही सामाजिक बुराइयों का खंडन किया जो वैदिक शिक्षा के अनुरूप नहीं थीं। उन्होंने पुरजोर घोषणा की कि वेद ही निश्चित रूप से बृह्मांड में ज्ञान का भंडार है! वह जहां भी जनता व सामाजिक शास्त्रियों को सम्बोधित करते उनका ध्येय "वेदों की ओर लौटो" को लेकर ही होता। अंग्रेजी शासन में धर्म और धार्मिक प्रवचनों की स्वतंत्रता की अनुमति प्रदान करने के कारण, स्वामी जी को वास्तव मे एक अनुकूल परिस्थिति और वातावरण मिल गया। ईसाई धर्म की दुर्गम बयानबाजी और भारत में अंग्रेजी शासन की आलोचनाओं के बावजूद उन पर न तो कोई आक्षेप लगाया गया और न ही कोई विरोध जताया गया। अपितु अंग्रेजी शासन में स्वामी जी का बचाव व सुरक्षा सर्वोपरि था। इस के विपरीत उन पर अपने ही लोगों द्वारा जानलेवा हमलों के प्रयास हुए। बनारस शास्त्रार्थ और बरेली सार्वजनिक सम्बोधन में शारीरिक क्षति पहुंचाने के कारण पुलिस को अनियन्त्रित भीड़ से स्वामी जी को संरक्षण देना पड़ा। इसके विपरीत, स्वामी जी जैसे दिव्य व्यक्ति के मुख से धार्मिक प्रतिकूल टिप्पणियां, मुगल शासन कभी बदार्शत नहीं करता। स्वामी जी की कथनी और लेखन में मुगल शासन में धार्मिक आलोचनाओं के कारण जिन्दा बच सकने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्वामीजी, स्वयं अंग्रेजों में असीम अनुशासित जीवन एवं घोषित व्यक्तिगत सम्मान व भारत में कुशासन के बावजूद, उसकी प्रशंसा करते थे।

महर्षि एक राष्ट्रवादी व अद्वितीय देशभक्त होने के कारण लोगों के दृष्टिकोण में विदेशी प्रधानता, व्यवहार और प्रभाव की भर्त्सना करते थे। विविधता में एकता एवं बहुलवादी समाज के बारे में हमारे तथाकथित धर्म–निर्पेक्षतावादियों और नेताओं की बातें लच्छेदार नहीं है बल्कि मूर्खतापूर्ण भी होती हैं। इस प्रकार की चर्चा अप्रासंगिक और अतार्किक है क्योंकि विविधता के माहौल में "एकता" कभी नहीं हो सकती। महर्षि ने समाज में भाई–चारे की अवधारणा को प्रचार किया और बहुतायत धर्म एवं सम्प्रदाय की निंदा की।

सच यह है कि भारत एक बहु–भाषी, बहु–जातीय, बहु–धार्मिक देश है किन्तु इन विशेषताओं को बढ़ावा नहीं देना चाहिये, क्योंकि वे अन्ततः घातक सिद्ध हो सकती हैं। महर्षि दयानन्द ने भाषा, धर्म और राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण के मुद्दे पर एक सत्ता की पुरजोर वकालत की जबकि स्व–शासन, स्वदेशी, देश की एकता और अखण्डता महत्वपूर्ण है। एक राष्ट्रवादी और सर्वोपरि देशभक्त होने के नाते उन्होंने अपने दृष्टिकोण, व्यवहार, शिक्षा संस्थाओं में विदेशी प्रभुत्व तथा विदेशी प्रभाव को नकारा। उन्हें 'स्वदेशी' हर वस्तु प्यारी थी, जबकि हर 'विदेशी' वस्तु उन्हें अस्वीकार्य थी। हालांकि यह निर्विवाद तथ्य है कि हमारे देश में विभिन्न मतों के लोगों का निवास है फिर भी "ईसाई" और "इस्लाम" धर्म विदेशी है। इन धर्मों के अनुयायी भारतीय हैं और भारत में जन्म लेने के कारण वे भारतीय नागरिक होते हैं। इन धर्मों के संस्थापक भारत में नहीं जन्मे इसलिये भारत के संविधान के अधीन इन्हें भारतीय नहीं माना जा सकता और न ही मान्यता दी जा सकती है।

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि स्वामी जी ने अपने प्रवचनों अथवा संग्रहों में हिन्दू धर्म का किसी संदर्भ में प्रयोग नहीं किया क्योंकि यह एक धर्म है ही नहीं। इसका न तो कोई निर्माता है और न ही कोई हस्तलिपि। इसके बावजूद हम सब बिना किसी समझौते के हिन्दू राष्ट्र से सम्बन्धित अपनी पहचान बनाये हुए हैं। इस प्रकार बहु–मत अल्पसंख्यक समुदाय का तर्क व्यर्थ तथा निरर्थक हो जाता है। अल्पसंख्यक समुदाय के आंकड़े करोड़ों में हैं। ऐसे बड़े आंकड़े की आबादी वाले समुदाय को अल्पसंख्यक का दावा करता है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

महर्षि ने धर्मपरिवर्तन के विरुद्ध कठोर अभियान चलाया। किसी भी नेता ने धर्म परिवर्तन और हिन्दुओं को विदेशी धर्म को गले लगाने की निन्दा नहीं की। धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया और व्यापक गति के कारण महर्षि व्याकुल थे। वह एक महान दूरदर्शी योगी थे जो मुस्लिम आबादी की ज्योमेट्रीकल प्रगति के प्रतिकूल परिणामों की परिकल्पना कर सकते थे। उन्होंने भविष्यवाणी कर जताया था कि मुसलमानों की संख्यात्मक ताकत हिन्दुओं से अधिक हो जावेगी। उन्होंने चेताया कि ऐसी स्थिति में देश को विनाशकारी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। उनके इन प्रयासों के कारण धर्मपरिवर्तन की गति को रोकने में काफी सफलता मिली। उनके शुद्धि आन्दोलन का अभियान धर्मपरिवर्तन की प्रवृत्ति को समाप्त करना था। लाला लाजपतराय और उनके परिवार के सदस्यों ने इस्लाम को गले लगाने का निर्णय ले लिया किन्तु उन्होंने अपना मन बदल लिया। कट्टर राष्ट्रवादी डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म को कभी न छोड़ने का प्रण लिया। हालांकि उच्च हिन्दू जातियों द्वारा उन पर गालियाँ और अपमान की बौछारें बरसाई गईं। उनको इस्लाम और ईसाई धर्म अपनाने का लोभ दिया गया किन्तु उन्होंने इन पेशकशों को यह कहकर ठुकरा दिया कि कोई प्रलोभन उनको अपने धर्म के विरुद्ध बहकाकर नहीं ले जा सकता। अंत में, स्वतंत्र भारत के निर्माण में स्वामी जी का योगदान नकारा नहीं जा सकता। D.A.V. शैक्षणिक संस्थाएं इसका जीता–जागता उदाहरण हैं।

मूल लेख (अंग्रेजी में)

83, डाक्टर्स कॉलोनी,
जयपुर–302021

O God, make me fearless.
Let me not fear my friends or foes.
Let me not fear
from the known or the unknown
during day or night.

Let me not fear anyone
and let me have friends
on all sides.

अभय करो प्रभु, अभय करो हमें!
भूमि से न भय हो, आकाश से न भय हो;
मित्र से न भय रहे, शत्रु से न भय हो;
भय हो न सामने से, पीछे से न भय हो;
दायें से न भय हो, न बायें से ही भय हो;

दिन में न भय हो, न रात में भी भय हो;
शत्रु मेरा कोई न हो, सब ही दिशाएं मेरी
मित्र बनें और मेरी मित्रता की जय हो!

www.thearyasamaj.org

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

लेख का शीर्षक ईशोपनिषद् के प्रथम मंत्र का अंश है। वर्तमान् आर्थिक भूचाल के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिये यही मंत्रांश उपयुक्त प्रतीत हुआ।

मंत्र है– ऊँ ईशावास्यमिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

महर्षि दयानंद सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम सम्मुलास में इसका अर्थ करते हैं – हे मनुष्य! तू, जो कुछ इस संसार में जगत है, उस सब में व्याप्त होकर नियन्ता है, वह ईश्वर कहाता है। उससे डर कर तू, अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायरूपाचरण धर्म से अपने आत्मा से आनन्द को भोग। पृष्ठ 126

श्री सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ने अपने भाष्य में इसका अर्थ किया है– ''इस जगती में जो जगत है, व ईश द्वारा बसा हुआ है, इसलिये त्यागपूर्वक भोग करो। किसी दूसरे के धन की आकांक्षा मत करो।'' व्याख्या में निम्न वाक्य शीर्षक के अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हैं– संसार में सब वस्तुएं उसकी (ईश की) हैं। अतः उसकी वस्तु को अपना समझना तो चोरी के समान है। जो दूसरे के पास है, उसे अपनाने का प्रयत्न करना तो उसकी दृष्टि में दोहरी चोरी है।'' दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि मृत्यु के बाद सब धनैश्वर्य, सत्ता–सुख, वैसा का वैसा ही यहीं रह जाता है। इसीलिये मंत्रांश में कहा गया है– 'ईश्वर द्वारा प्रदत्त समस्त सुख–समृद्धि का त्याग भाव से भोग करो। 'मा गृधः' गिद्ध मत बनो, लूट खसोट मत करो, अनुचित तरीकों से धन अर्जित व संग्रह मत करो।'

यह सोच आध्यात्मिक स्तर की है, मानव की सुख–शांति का आधार है। यह नहीं कि वेद में धन की आवश्यकता को महत्व को कम आंका गया है। इसके विपरीत, वयम् स्याम पतयो रयीणाम' में धनैश्वर्यों के स्वामी होने की प्रार्थना की गई है। ईशोपनिषद के उपरोक्त मंत्र में अर्जित धन के उपयोग की सीमा निर्धारित की गई है। संत वाणी भी इस भाव की पुष्टि करती है।:–

1. साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

2. गौ–धन, गज–धन, बाजि–धन और रतन धन खान।

जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

3. पूत सपूत तो क्यों धन संचय।

पूत कपूत तो क्यो धन संचय।।

धन के आविर्भाव के साथ ही धन–संग्रह की प्रवृत्ति मानव के रक्त में घुल–मिल गई। धन संग्रह की प्यास, कामाग्नि की प्यास से कम नहीं है। यह पिपासा धन जितना संग्रह किया जावे, भोग किया जावे, उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इसीलिये मनीषियों ने धनोपार्जन में शुचिता, पवित्रता का तत्व अनिवार्य कर दिया। पुरुषार्थ से, ईमानदारी से अर्जित किया अन्न ही शरीर व आत्मा को बल देता है। कहा भी गया है– '' जैसा खाओ अन्न वैसा होवे मन।'' अर्थ–शुचिता का ध्यान रखने के कारण ही, श्रीकृष्ण महाराज ने दुर्योधन के स्वादिष्ट, षड्रस भोजन की अपेक्षा, महात्मा विदुर का आतिथ्य स्वीकार किया।

अब आइए वर्तमान् में। डॉ. पट्टाभि सीतारामैया के अनुसार – गाँधी जी द्वारा संचालित स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में 85 प्रतिशत से अधिक आन्दोलनकारी आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज ने कोई राजनीतिक दल नहीं बनाया । गाँधी जी के दुराग्रह के चलते राष्ट्रवादी, कर्मयोगी, सरदार वल्लभ भाई पटेल के स्थान पर, कैम्ब्रिज–इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त, अंग्रेजियत के रंग में रंगा, पाश्चात्य, मुस्लिम व भारतीय संस्कृति का अपमिश्रण, 'नरम' पं. जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बना।

जोर–शोर से , वर्षों प्रचारित किया गया कि गाँधीजी के अहिंसात्मक आन्दोलन से ही देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यशगान हुआ– दे दी हमें आजादी बिना खड्ग, बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये किये गये 90 वर्ष के संघर्ष में अनगिनत जानें गईं। लाखों घर बेघर–बार हुए। जेल की भीषण, अमानवीय यातना सही। याद है आपकों ? वीर विनायक दामोदर सावरकर को कालापानी – अंडमान की जेल में बैल के स्थान पर जोत कर कोल्हू चलवाया गया था। जनमानस की स्मृति को सदा, सर्वदा के मिटाने के लिये वे समस्त संत और सुधारक जिन्होंने आजादी की आधारशिला रखी, क्रांतिकारी–समूह, धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन के लिये अपना सर्वस्व झौंकने वाले महामानव, सभी भुला दिए गए। लगभग 60 वर्ष तक कांग्रेस ने केन्द्र व प्रदेश में शासन किया। कांग्रेस ने भ्रष्टाचार, लूट–खसोट व धन–लोलुपता को ही अपनी संस्कृति, अपनी पहचान बना लिया। मुख्यमंत्री पद पर वे ही आसीन हो पाते थे जो प्रधानमंत्री ही नहीं उसके बेटे के पैरों में चप्पल पहनाते थे। विरुद गान करते थे – 'इण्डिया इज इंदिरा, इंदिरा इज इण्डिया'। दूसरा वर्ग वह था जो कांग्रेस कोष भरने के लिये वचनबद्ध हो जाता था। एक मुख्यमंत्री के संबंध में ग्वालियर में यह किंवदन्ती थी कि उन्हें दिल्ली दरबार में प्रतिमाह चालीस लाख रुपया चढ़ावा भेंट करना पड़ता था।

राजनीति का यह स्वरूप हो गया कि एक बार, केवल एक बार सत्ता पर अधिकार जमा लो; लूट खसोट कर, धन अर्जित कर लो। सत्ता और अर्थतंत्र पर कन्ट्रोल सदा सर्वदा के लिये हो जावेगा। सत्ता वंश परम्परागत बना दी गई। कहा जाने लगा– डॉक्टर का बेटा, डॉक्टर। इंजीनियर का बेटा, इंजीनियर बनेगा तो नेता का बेटा नेता नहीं तो क्या बनेगा? संवैधानिक प्रावधान न होने के कारण राजनीतिक पदों पर आसीन होने के लिये शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री व मंत्री पद पर अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, किसी को भी पदासीन कराया जा सकता है।

आइए, अब 60 वर्षों के शासन में अर्थतंत्र के स्वरूप और राजनीति में उसकी भूमिका की चर्चा की जावे। राजनीति में एकाधिकार प्रवृत्ति ने उद्योग और व्यापार में पहले से ही मौजूद एकाधिकार प्रवृत्ति की जड़ों में खाद–पानी डाला। कार निर्माण में धनश्यामदास बिड़ला का एकाधिकार था। देश–प्रदेश के शासन के कर्णधारों में, उच्च पदों पर आसीन कर्मचारियों के लिये अम्बेसेडर कार ही उपयुक्त समझी गई। निर्माण से लेकर विक्रय तक एकाधिकार बिड़ला जी के पास ही रहा। शासन तंत्र में अम्बेसेडर का वर्चस्व अभी बना हुआ है। अन्य धनाढ्यों ने और भी नायाब तरीके अपनाए। बजट प्रावधानों की बजट पारित होने से पूर्व जानकारी प्राप्त कर करोड़ों कमाए। अर्थतंत्र पूरी तरह जमाखोरों, कालाबाजारियों के हाथों में सिमट गया। कभी शक्कर, कभी प्याज, कभी टमाटर की न्यूनता पैदा करके बेहिसाब मूल्य बढ़ाकर, अभूतपूर्व लाभ कमाया। व्यापार और उद्योग में लाभ अर्जन की सीमा ही नहीं रही। 100 से 1000 प्रतिशत तक, कुछ भी लिया जा सकता था, लिया जाता है। दवा निर्माता कंपनियों का यह चलन जग जाहिर है।

कांग्रेस के बाद अस्तित्व में आये, एकाध को छोड़, सभी राजनैतिक दलों ने सत्ता व अर्थ–तंत्र पर अधिकार जमाने का कांग्रेसी तरीका अपनाया। जातिवाद, वर्ग–संघर्ष, सवर्ण, गैर–सवर्ण का छौंका लगाया और कुछ वर्षों में ही करोड़पति, अरबपति बन गए। इस तरह अर्जित धन को गुप्त बनाने में चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट्स व टैक्स एक्सपर्ट वकीलों का भरपूर सहयोग मिला। एक उपाय के रूप में टैक्स हैवन देशों की बैंकों में काला धन जमा करा दिया जाने लगा। देश में दो समानान्तर अर्थव्यवस्थाओं ने जन्म लिया। एक शासन द्वारा संचालित, दूसरी भ्रष्टाचारियों द्वारा संचालित।

शत्रु देशों ने अपने देश में भारत के नकली नोट छापकर आतंकवाद को पनपाया। नक्सली अर्थव्यवस्था का आधार भी नकली नोट बने। पूरी अर्थव्यवस्था चरमरा गई। गरीब और अमीर की खाई सीमातीत हो गई।

इस पृष्ठ भूमि में, स्वतंत्रता प्राप्ति के 78 वर्षों बाद नरेन्द्र मोदी का भारत की राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश हो रहा था।

मार्च, 2013 में प्रकाशित अपने लेख ''राष्ट्रवाद बनाम आतंकवाद'' में इस प्रवेश को 'धमाकेदार' निरूपित किया था, उतना ही जितना शिकागो की धर्मसभा में, एक ही नामराशि नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) का हुआ था। स्वामीजी के संबोधन– भाइयों और बहनों, से ही धर्मसभा कक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था। इसी लेख में ही अन्यत्र,

उल्लेख किया था कि मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने से विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण होगा'।

अगस्त 2013 में प्रकाशित लेख '7221 की थाली और मोदी की थाली' में रेखांकित किया था–**मुझे मोदी के रूप में 'पंकिल भारतीय राजनीति में धूमकेतु' उठा हुआ दिखाई दिया।** इस लेख में और भी बहुत कुछ अनूठा था।

मोदी जी पहली बार सांसद बने थे। संसद भवन को सेवा का मंदिर मान कर प्रथम सीढ़ी पर माथा टेक दिया। प्रभु से सेवक बने रहने का आशीर्वाद माँगा। जीवन की तीन एषणाओं –पुत्रैषणा, वित्तैषणा व लोकैषणा का त्याग कर चुके थे। नवविवाहिता पत्नी से सहमतिपूर्वक विछोह से पुत्रैषणा स्वतः समाप्त हो गई। वित्तैषणा व लोकैषणा का त्याग, गुजरात के मुख्यमंत्री बनने पर कर दिया। मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री पद पर जाते हुए मुख्यमंत्री पद में प्राप्त वेतन–भत्ते की राशि कर्मचारियों की निधि हेतु दे दी ।

जब प्रधानमंत्री पद सम्हाला तो अनुभव पर आधारित विश्वास और पक्का हो गया। राजनीति और प्रशासन तंत्र दोनों भ्रष्टतंत्र में आकण्ठ डूबे हुए थे। इस पद को, इस कर्मयोगी ने, ईश्वरीय आदेश–'परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्' समझकर ग्रहण किया। देश के सर्वोच्च सत्ता पद पर जो व्यक्ति निरासक्त जीवन जी रहा है, वह गीता निर्देशित जीवन ही तो जी रहा है।

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

www.thearyasamaj.org

सृष्टि उत्पत्ति वेद एवं विज्ञान में

● शिवनारायण उपाध्याय

मनुष्य ने जब से होश संभाला तभी से वह यह जानने का प्रयत्न करता रहा है कि यह सृष्टि कब से है? क्या कभी इसकी उत्पत्ति हुई अथवा यह सदैव से है? यदि इसकी उत्पत्ति हुई है तो इसे किसने उत्पन्न किया है? उत्पत्ति कर्ता ने इस सृष्टि की रचना क्यों और किस उपादान कारण से की है? ऋग्वेद 10.31.7 में एक जिज्ञासु एक विद्वान् से प्रश्न करता है–किं स्विद्वनं क उ वृक्षे आसयतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः? वह कौन सा वन है और वह कौनसा वृक्ष है जिससे विधाता ने इस सृष्टि की रचना की है?

फिर जिज्ञासु इस सृष्टि के विस्तार के विषय में पूछता है–क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावदं मरुतो यस्मिन्नायय।। ऋ. 1.168.6 इस विशाल ब्रह्माण्ड का परला सिरा कहाँ है और निचला सिरा कहाँ है?

इसी प्रकार एक जिज्ञासु पृथ्वी के अन्त और केन्द्र के विषय में पूछता है–पृच्छामित्वा परमन्तं पृथिव्या पृच्छामि यत्र भूवनस्य नाभिः। ऋ.1.164.34 मैं आपसे पूछता हूँ कि इस पृथ्वी का अन्त कहाँ पर है? मैं आप से यह भी पूछता हूँ कि इस सृष्टि का केन्द्र कहाँ स्थित है।

वास्तव में जब सृष्टि उत्पत्ति की बात करते हैं तो तीन पक्ष सामने आते हैं–जैन और बौद्ध धर्म का मानना यह है कि सृष्टि सदा से है, न कभी इसकी उत्पत्ति हुई है और न कभी इसका अन्त ही होगा। प्राचीन यूनानियों का भी मानना था कि सृष्टि सदा से है। स्वामी शंकराचार्य इस सृष्टि को मिथ्या मानते हैं। वेदों के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति लगभग 2 अरब वर्ष पूर्व हुई है, इसके पूर्व प्रलयावस्था थी परन्तु प्रलय के पूर्व भी सृष्टि थी। वास्तव में वेद सृष्टि को प्रवाह से अनादि मानते हैं अर्थात् सृष्टि उत्पत्ति स्थिति और प्रलय क्रम से सदैव चलते रहते हैं।

विज्ञान की मान्यता भी यही है कि सृष्टि सदा से नहीं है परन्तु कुछ अरब वर्ष पूर्व इसकी उत्पत्ति हुई है और एक निश्चित समय बाद इसका अन्त होगा। अपनी मान्यता की सिद्धि के लिए वे दो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं–

डॉ. एडवर्ड लूथर सानफ्रान्सिस्को विश्वविद्यालय में जीन विभाग के अध्यक्ष रहे हैं, उन्होंने लिखा है कि उष्मागति का दूसरा नियम जिसे एन्ट्रोपी का नियम भी कहा जाता है सृष्टि के सदैव से रहने की बात को गलत सिद्ध कर देता है। एन्ट्रोपी के नियम से पता चलता है कि अपेक्षाकृत गरम पिण्डों से ताप ठंडे पिण्डों की ओर लगातार प्रवाहित होता रहता है तथा इस प्रवाह को उलट कर स्वतः विरुद्ध दिशा में प्रवाहित नहीं किया जा सकता है। यह क्रिया उस समय तक चलती रहती है जब तक कि दोनों पिण्डों का ताप एक सा न हो जाये। जब सर्वत्र ताप एकसा हो जायेगा तो कोई उपयोगी ऊर्जा शेष नहीं रह जायेगी, तब भौतिक और रासायनिक कोई भी क्रिया नहीं होगी किन्तु क्योंकि अभी भौतिक एवं रासायनिक क्रियाएँ जारी हैं अतः जीवन का अस्तित्व चल रहा है। इससे यह स्पष्ट है कि हमारा यह विश्व सदैव से नहीं रहा है। इसकी कुछ समय पूर्व उत्पत्ति हुई है।

डॉ. क्लीवलैण्ड कोथरान लिखते हैं–रसायन शास्त्र यह रहस्योद्घाटन कर रहा है कि द्रव्य का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। कुछ प्रकार के द्रव्यों का तेजी से और कुछ का धीरे–धीरे, इसलिए द्रव्य का अस्तित्व शाश्वत नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसका अन्त है तो कभी न कभी उसका आदि भी होना चाहिए।

सृष्टि निराभ्रम है, सृष्टि मिथ्या है इसे विज्ञान हास्यास्पद मानता है।

इस प्रकार वेद और विज्ञान दोनों की मान्यता है कि सृष्टि की उत्पत्ति कुछ निश्चित समय पूर्व हुई है और उसका अन्त भी होगा।

फिर प्रश्न उपस्थित होता है कि इस सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व क्या था? विज्ञान के पास इस प्रश्न का कोई प्रभावी उत्तर नहीं है। वैज्ञानिकों का कहना यह है कि सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व यह विश्व शून्य आयतन में ताप की सघनता और तापमान की उच्चता में स्थित था। वैज्ञानिकों का मत है कि हमारा काम तो सृष्टि उत्पत्ति के समय Big Bang Singularity को जान कर प्रकृति के नियमों से चल जाता है। हमें यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं है कि Big Bang Singularity के पूर्ण क्वा स्थिति थी। परन्तु वेद में सृष्टि की उत्पत्ति तथा उसके पूर्व की स्थिति का भी वर्णन हुआ है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 72, सूक्त 190 में सृष्टि उत्पत्ति पर तथा सूक्त 129 में इस से पूर्व की स्थिति पर भी विचार किया गया है।

नासदत्सीन्नो सदासीत्तदानीं नामीद्रजोनोव्योमा परोयत।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नभः किमासीद् गहनं गभीरम्।। ऋ. 10.129.।

इस जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व न सत था और न असत था। उस समय नाना लोक भी नहीं थे। न आकाश था और जो आकाश से परे हैं वह भी नहीं था। उस समय कौन सा पदार्थ सबको चारों ओर से ढक सकता था? यह सब फिर कहाँ था? किसके आश्रय में था? तो गहन और गम्भीर समुद्री जल कहाँ था।

न मृत्यु आसीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेत।
अदानवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न पर किं चनास।। ऋ. 1. 29.2

उस समय मृत्यु नहीं थी और न उस समय अमृतत्व ही था। न रात्रि का ज्ञान था और न दिन का कोई चिन्ह था। उस तत्व का स्वरूप प्राण शक्ति रूप था परन्तु स्थूल वायु नहीं थी। वह एक शक्ति रूप प्रभु अपने ही बल से समस्त जगत् को धारण करने वाला अपनी शक्ति से युक्त था। उससे भिन्न दूसरा कोई पदार्थ नहीं था। उससे अधिक सूक्ष्म भी नहीं था। **तम आसीत्तपसा गूळहमग्रेऽ प्रकेतं सलिलं इदम्।।** ऋ. 10.129.3 सृष्टि के पूर्व अन्धकार था। सब कुछ अन्धकार से व्याप्त था। कुछ भी विशेष जानने योग्य नहीं था। एक व्यापक गतिशील तत्व था जो सबको ढके हुए था। विज्ञान की मान्यता है कि यह समस्त संसार ऊर्जा से बना है। विज्ञान का मानना है कि पदार्थ की कोई स्थिति नहीं है ऊर्जा ही मुख्य है। वेद भी इसका समर्थन करता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋग्वेद 2.16.2 की ऋचा के भावार्थ में लिखते हैं कि सृष्टि में यह जो कुछ भी स्थूल पदार्थ है वह सिवाय विद्युत ऊर्जा के कुछ भी नहीं है। ऋग्वेद 10.72 के मन्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में वर्णन हुआ है।

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया।
उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्चादुत्तेर युगे।।
ऋः 10.72.1

अब हम वेद वाणी रूप प्रशस्त वाणी के सूर्य, चन्द्र, तारे आदि देवों के जन्मों को प्रतिपादित करते हैं। इसलिए इन वेद मन्त्रों के उच्चरित होने पर जो कुछ उपस्थित होता है वह आने वाले युगों में इस सृष्टि की उत्पत्ति को देखता है।

डॉ. डोनाल्ड हेनरी पोरटर के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में विज्ञान में दो मतों पर विशेष विचार किया जाता है। पहला मत अल्फर–केथ–गेमो का है जिसके अनुसार विश्व विकसित हो रहा है। दूसरा मत बौण्डी–गोल्डी–होइल का है जिसके अनुसार विश्व में निरन्तर सृजन की क्रिया चल रही है। आकाश और आकाशीय पिण्डों के भ्रमण कक्ष की दृष्टि से विश्व स्थिर रहता है उसका विकास नहीं होता है। पहले मत के अनुसार विश्व ताप की सघनता और तापमान की उच्च अवस्था से विस्फोट होने से बना है। इस मत के अनुसार विश्व मूलभूत अत्यन्त संपीडित तारों एवं आकाश गंगाओं के निकटवर्ती अत्यन्त गरम गैसों से तथा पृष्ठभूमि में विद्यमान सामग्री से बना है। आकाश गंगाओं की जो इस समय बाहर की ओर गति है वह इसी विस्फोट का परिणाम है। अधिकतर वैज्ञानिक इसी Big Bang Singularity पर विश्वास करते हैं। वेद में भी ताप की अधिकता से ही सृष्टि की उत्पत्ति मानी है।

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवा धमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सद जायत।।
ऋ. 10.72.2

ज्ञान का स्वामी परमात्मा एक लोहार की तरह इन सूर्यादि देवों की आकृतियों को प्रकृति पिण्ड को सन्तप्त करके ढालता था। इन देवों के निर्माण काल वाले प्रथम युग में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त जगत् प्रादुर्भूत हो गया।

वेद और विज्ञान दोनों का मानना है कि सृष्टि क्रमिक रूप से परिवर्तित होकर वर्तमान अवस्था को प्राप्त हुई है।

देवानां युगे पथमेऽसतः सद जायत।
तदाशा अन्वजायन्तं तदुत्तान पद स्परि।।
ऋ. 10.72.3

देवों के निर्माण के इस प्रथम युग में अव्यक्त प्रकृति से यह आकृति वाला जगत् उत्पन्न हुआ है। इन लोकों के बन जाने के बाद दिशाएं उत्पन्न हुईं। इसके बाद ऊर्ध्व गति वाले ये वृक्ष वनस्पति उत्पन्न हुई। इस प्रकार देव युग के बाद वनस्पति युग आया। इससे सिद्ध हुआ कि सृष्टि की क्रमिक उत्पत्ति हुई है। तैत्तिरीय उपनिषद और सांख्य दर्शन भी इसका समर्थन करते हैं। ऋ. 10.190 की तीनों ऋचाएँ भी यही बता रही हैं।

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः।। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यपृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिम्योऽन्नम्। अन्नद्रेवः। रेतसः पुरुषः। स वा एव पुरुषोऽभरस मय।। क्रमिक उत्पत्ति का क्रम रहा आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, ओषधियाँ, रेतसः और फिर मनुष्य।। इनमें आकाश की तो उत्पत्ति होती नहीं क्योंकि आकाश तो रिक्त स्थान मात्र है। इसलिए मनुष्य की उत्पत्ति क्रमिक परिवर्तन के छः परिवर्तनों के बाद रेतसः (रज, वीर्य) से हुई है। इस परिवर्तन में छः चतुर्युगियाँ लगी हैं।

सांख्य दर्शन में कहा गया है, **"सत्वरजस्तमसा साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृते र्महान महतोऽङ्कारात पञ्चतनमात्राण्युभयमिन्द्रियं पञ्चतन्मात्रेभ्य स्थूल भूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः।।"**

यहाँ भी परिवर्तन के छः स्तर के बाद ही पुरुष उत्पन्न हुआ है। जीव अनादि है इसकी उत्पत्ति नहीं होती है। इस विषय पर डॉ. मारलिन लिखते हैं पाश्चर (Pasteur) के समय से ही यह माना जाता है कि किसी अजीव द्रव्य से जीव की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। सृष्टि की उत्पत्ति जीवों के कर्म फल भोगार्थ हुई है। जीव और ब्रह्म मित्र हैं। ब्रह्म जीव के लिए सृष्टि उत्पन्न करता है।

नाहमिन्द्राणिरारण सख्युर्वषाकपे र्ऋते।
यस्येरमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तर।।

हे प्रकृति। मैं अपने इस मित्र वृषाकपि (जीव) के बिना इस सृष्टि रूपी क्रीड़ा को नहीं करता हूँ।

अब विचार करते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति को कितना समय हुआ है। सृष्टि की उत्पत्ति के समय को जानने में विज्ञान में Hubble Law काम करता है। सन् 1929 में Hubble ने एक अत्यन्त शक्तिशाली दूरदर्शी की सहायता से कई आकाश गंगाओं को देखा। इससे उसे ज्ञात हुआ कि जो आकाश गंगा हमसे जितना अधिक दूर है वह उतने ही अधिक वेग से हमसे दूर भाग रही है। उसने यह भी मालूम किया कि जो आकाश गंगा हमसे 10 लाख प्रकाश वर्ष

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

देव दयानन्द की 1857 के स्वतन्त्रता–संग्राम में रही भूमिका

● खुशहाल चन्द्र आर्य

यह लेख डॉ. रामफल सिंह दलाल एडवोकेट द्वारा लिखित "महर्षि दयानन्द सरस्वती एक परिचय" नामक पुस्तिका में "भूमिका" शीर्षक से उद्धृत है। इस पुस्तक में महर्षि का सन् 1857 के "स्वतन्त्रता–संग्राम" जिसको अंग्रेजों ने "सैनिक विद्रोह" घोषित किया था, उसमें बहुत अधिक सम्बन्ध दर्शाया गया है जो साधारण व्यक्ति नहीं जानता, इसलिए इस लेख की उपयोगिता व महत्ता को समझ कर ही यह लेख मैंने लिखा है। जो इसी भाँति है।

सन् 1855 ई. में स्वामी जी कुम्भ मेला के लिए हरिद्वार आये और चण्डी पर्वत पर ठहरे। वहाँ वे अनेक साधु, सन्तों और महात्माओं के सम्पर्क में आये। इसी स्थान पर स्वामी रुद्रानन्द के माध्यम से क्रान्तिकारी पेशवा नाना साहब, बाला साहब, अजी मुल्ला खाँ, तात्याँ टोपे और कुँवर सिंह, स्वामी जी से मिले। स्वामी जी ने अपने विचार उनके सामने रखते हुए कहा:–"भारत असभ्य देश नहीं है। अंग्रेज भारतीयों से अधिक सुसभ्य भी नहीं है। ऐसे देश को पद–दलित करना महापाप है। इसको सहन करना और भी महापाप है।" स्वामी जी ने गुलामी के कारणों पर प्रकाश डाला। "महाभारत के काल से भाई–भाई का आपस में लड़ना ही भारत के सर्वनाश का मुख्य कारण है। मुगल शासन के बाद भी मराठों और सिक्खों की शक्तियों के एक न हो पाने से भारत अंग्रेजों के हाथों में चला गया।" स्वामी जी की घोषणा थी "कभी स्वतन्त्रता का युद्ध कभी विफल नहीं होता।"

कुम्भ मेले में स्वामी जी सन्तों और मठाधीशों से मिले। चारों शंकर पीठों के उत्तराधिकारियों ने स्वाधीनता से कन्नी काट ली। वैष्णव सम्प्रदाय भी देश, समाज की अपेक्षा भजन–कीर्तन को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। अन्य पंथों के साधु स्वामी जी को ही राष्ट्रीय उद्देश्य से भटकाने लगे। इस मेले में काशी के गौड़ीय मठ के स्वामी विशुद्धानन्द जी भी आये थे। स्वामी जी ने पुरुष सूक्त के मन्त्र "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत" का अर्थ सुना कि ब्राह्मण, परमात्मा के मुख से उत्पन्न हुआ है, तो वे बड़े दुःखी हुए और उसका सही अर्थ बताया कि ब्राह्मण समाज का मुख है। उन्होंने इस मेले में मत मतान्तरों को निर्भीकता से खण्डन किया। विरोधियों ने ज्यों–ज्यों स्वामी जी के बारे में दुष्प्रचार किया उससे उनकी प्रसिद्धि बढ़ गई।

कुछ समय उपरान्त झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अपनी सहचरी गंगा बाई और तीन अन्य कर्मचारियों के साथ स्वामी जी से मिली। उन्होंने स्वामी जी से हँसते हुए युद्ध में मरने का आशीर्वाद माँगा। स्वामीजी को लगा कि निराश परिस्थितियों में भी स्वाधीनता की चिंगारी शेष है। कहा:–"स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए शुभ और कल्याण की प्रार्थना करते हैं। "लक्ष्मीबाई ने स्वामी जी के इन्कार करने के बाद भी 1001 रुपये दक्षिणा स्वरूप भेंट में दिये। इसी तरह उत्तरी बंगाल से नाटौर की रानी भवानी का वंशज गोविन्दराय भी 1001 रुपये भेंट में देकर गया था।

नाना साहब दूसरी बार स्वामी जी से मिले और अपनी निर्दिष्ट योजना स्वामी जी को बताई। यथा सम्भव सूचित करने का वचन देकर आशीर्वाद लिया। स्वामी जी ने आशीर्वाद देकर कुछ दक्षिणा राशि जो प्राप्त हुई थी रुपये 2635/– नाना साहब को स्वदेश रक्षा के लिए दिये। साथ ही चेतावनी दी कि "जन–साधारण का नेतृत्व और आग से खेलना, दोनों ही खतरनाक हैं। साधारण सी भूल से भी सर्वनाश हो सकता है। अतः आप को सदा सब से सावधान रहना आवश्यक है। "स्वामी जी ने विभिन्न सम्प्रदायों के साधुओं को स्वधर्म रक्षा के लिए तैयार रहने और जन–साधारण में नया उत्साह फूँकने का उपदेश दिया। स्वधर्म को पिता और स्वदेश को माता की संज्ञा देकर इनकी रक्षा करना अनिवार्य बताया। ढाई सौ साधुओं की एक सूची तैयार हुई जो स्वामी जी के आदेश पर देश सेवा के लिए तैयार थे। वे स्वामी जी के आदेश पर सैन्यावास (छावनियों) में कमल का फूल और चपाती बाँटकर सैनिकों को स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए प्रेरित करते हुए चारों दिशाओं में फैले। प्रथम स्वातन्त्र्य समर से दो वर्ष पूर्व ही स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से हताश साधुओं में वीर–भाव का संचार किया। परन्तु उन्हें अधिकतर धर्म गुरुओं से निराशा ही मिली।

अप्रैल 1855 से नवम्बर 1860 तक का स्वामी जी के कार्य क्षेत्र का चुप भाग है जो उनके जीवन प्रसंगों में नहीं आता। निःसन्देह युगपुरुष दयानन्द सरस्वती क्या इस आन्दोलन में तटस्थ रहने वाले थे? वे अवश्य ही इस महान् कार्य में किसी महान् लक्ष्य की प्राप्ति में संलिप्त थे। इस कार्य काल के बारे में जब उनसे पूछा गया तो उनका उत्तर था कि इस रहस्य को उजागर करने पर भारत कभी भी स्वतन्त्र नहीं हो पायेगा।

महर्षि दयानन्द का जीवन प्रेरक–प्रसंगों से भरा पड़ा है। श्री डॉ. रामफल दलाल के इस संकलन में उत्तम प्रसंगों, कार्य क्षेत्र एवं व्याख्यानों की एक झलक दिखाने का उत्तम प्रयास है। प्रस्तुत संकलन स्वामी जी की जीवनी न होकर उनकी प्रेरणादायक घटनाओं को अपने अन्दर समेटे हुए है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठक वृन्द इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठा पायेंगे।

C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स
180 महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला) कोलकता–700007
मो. 9830135794

☞ पृष्ठ 04 का शेष

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा...

वित्तैषणा में आकण्ठ डूबे हुए सभी वर्गों के लोगों को प्रथम चेतावनी दी कि खातों में, खातों से बाहर रखा हुआ धन (Unaccounted Money) जिसे कालेधन का नाम दिया गया, 30 सिमम्बर 2016 तक स्वेच्छा से जमा कराइये। 55 प्रतिशत अपने पास रखकर 45 प्रतिशत शासकीय कोष में जमा करा दीजिये। अन्य कोई वैधानिक कार्यवाही नहीं की जावेगी। आंशिक रूप में ही योजना सफल रही। घाघ भ्रष्टाचारियों की नींद कहाँ खुलने वाली थी? चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट्स व टैक्स एक्सपर्ट वकीलों ने आय बचाने के शॉर्टकट बताकर अपना सिक्का जमा रखा था। व्यापारी वर्ग उन पर पूरी तरह आश्रित होने के कारण पूरी तरह आश्वस्त था कि सब कुछ ठीक हो जाएगा।

ठीक कुछ नहीं हुआ।

8 नवम्बर 2016 को रात्रि 12 बजे से 500 व 1000 के नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया। इसे सर्जिकल स्ट्राइक व आर्थिक इमरजेन्सी कहा गया। समस्त भ्रष्टतंत्र बौखला उठा, पगला गया। संसद में, सड़क पर भौंका जा रहा था और हाथी अपनी मस्त चाल चल रहा था। पर क्यों?

मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण, आज भी जनमानस के मन मंदिर पर क्यों छाये हुए हैं? क्यों उन्हें भगवान की पदवी से विभूषित कर दिया गया? इसलिये कि एक ने, सीता जी की पवित्रता के प्रति पूर्णतया आश्वस्त होने पर भी, अति साधारण जन, धोबी की बात मालूम होते ही, प्राणप्रिया पत्नी को लोकोपवाद का ध्यान कर, त्याग दिया। दूसरे ने राजसत्ता में मदोन्दत्त अपने ही अत्याचारी मामा का वध करने में संकोच नहीं किया। मुद्रा का विमुद्रीकरण कर मोदी जी ने वही स्थान जनमानस में बना लिया है जो इन महामानवों का है। रावण की सभा में अंगद ने पैर गाड़ दिया है।

सशक्त नेतृत्व और जन समर्थन की शक्ति ने करोड़ों की अघोषित संपत्ति को नदियों में बहा दिया, टुकड़े–टुकड़े कर बोरों में भरकर कूड़ेदान में फिंकवा दिया। जरा कठोर दिल दिमाग के कालाबाजारियों ने ऐसा नहीं किया, उनके घरों और प्रतिष्ठानों में बराबर छापे पड़ रहे हैं। कालाधन फूट–फूट कर निकल रहा है। क्रम जारी है और जारी रहेगा। त्यक्तेन भुञ्जीथा, मा गृधः का पाठ मोदी जी ने पढ़ा दिया। अरबपति खाकपति, भिखारी हो गए।

मोदी जी ने अपने भाषणों में स्पष्ट कहा है कि 'विमुद्रीकरण करके उन्होंने किन शक्तियों से पंगा मोल लिया है, वह बखूबी जानते हैं। वे उनका वध करा सकते हैं। उनके सिर के बाल नोचे जाते हैं।'' एक भाषण में उन्होंने कहा– मेरा क्या? फकीर हूँ, झोला लेकर फिर निकल पड़ूँगा।

इस प्रसंग में महर्षि दयानंद याद आ गए। महर्षि ने एक दिन पूर्व के भाषण में ईसाई धर्म की सत्य परंतु कटु आलोचना की थी। दूसरे ही दिन के भाषण में महर्षि ने कहा– लोग कहते हैं, सत्य भाषण न करूँ, कलेक्टर नाराज हो जावेगा, गर्वनर पीड़ा देगा। आगे कहा– सत्य भाषण ही करूँगा। इस नश्वर शरीर का क्या? कोई भी हरण कर ले।

गौड़ीय सम्प्रदाय के मठाधीश, काशी शास्त्रार्थ के शिरोमणि नायक स्वामी विशुद्धानंद सरस्वती ने महर्षि दयानंद के लिये कहा– वह तो अवधूत है अर्थात् पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा से मुक्त संन्यासी। हमारा तो मठ है। लाखों की आमदनी है। राजे–महाराजे तक चरण स्पर्श करते हैं। हमारा उनका क्या मेल?

'जन नायक अवधूत मोदी की जय हो।'

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
22, नगर निगम क्वार्टर्स जीवजीगंज,
लश्कर, ग्वालियर 474001 (म.प्र.)
मोबाइल– 9516622982
ई–मेल Khullar 2010@gmail.com

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रदेवो भव

● डॉ. धर्मवीर सेठी

गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में स्नात हो वहाँ के स्नातक को उसके भावी जीवन का मार्ग–दर्शाते हुए संस्कृत भाषा में कुछ यूँ उपदेश दिया जाता है:

'सत्य वद, धर्म चर, स्वाध्यात मा प्रमदः।

मातृ देवो भव! पितृ देवो भव! आचार्य देवो भव! अतिथि देवो भव...

'एष आदेशः, एष उपदेशः' इत्यादि।

अर्थात् सत्य मार्ग पर चलो, धर्मानुसार आचरण करो, स्वाध्याय से अर्थात् जिज्ञासु प्रवृत्ति से विमुख न होवो। ममतामयी माँ को देवता–तुल्य समझो, पिता को भी देवता मान समादृत करो, आचार्य भी देवता ही हैं और अतिथि (मेहमान) का भी देवता के समान आदर करो। आचार्य का आप सब को यह उपदेश है और आदेश भी।

इसी कड़ी में 'राष्ट्र देवो भव' को समाहित करना भी इस युग की माँग है। 'सत्यमेव जयते' हमारे संविधान के मुख–पृष्ठ पर लिखा है और लोकसभा, राज्यसभा के स्पीकर की व्यास पीठ के पीछे भी अंकित रहता है। अपने धर्म (Duty) को भली–भाँति निभाना व्यक्ति का कर्त्तव्य है। ज्ञानार्जन के लिए स्वाध्याय (पठन–पाठन) भी आवश्यक है। उस माँ को, जिसने नौ मास अपनी कोख में सन्तान को अपने रक्त से सींचा, छोड़ कौन देवता हो सकता है। कहा जाता है 'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही'। पिता की गणना माँ के बाद की गई है। पा धातु से 'रक्षणे' के अर्थ में पिता को परिवार के पालन–पोषण का दायित्व सौंपा गया है; आचार्य (शिक्षक या मास्टर नहीं) आ–समन्तात (चारों ओर से) अपने आचरण से शिष्य को प्रभावित करने के कारण, आचार्य भी अपने शुद्ध–स्वरूप में देव तुल्य ही है। **गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गरुर्देवोमहेश्वरः। गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरुवे नमः।** अपने गुरु में ही त्रिदेव के दर्शन हो जाएँ इससे महत्वपूर्ण और क्या हो सकता है और न 'विद्यते तिथिर्यस्य' जिसके आगमन की सूचना ही न हो ऐसे सुदामा–सरीखे मित्र–अतिथि को किसी देवता से कैसे कम दर्जा दिया जा सकता है। 'न जाने किस वेष में नारायण मिल जाए' न जाने कब किस व्यक्ति के रूप में उस परा–शक्ति से भेंट हो जाए।

परन्तु इन सभी इकाइयों के उपरान्त एक बृहद् इकाई और भी है और वह है 'राष्ट्र'। व्यष्टि रूप में माता–पिता, आचार्य और अतिथि मिलकर समष्टि अर्थात् समाज का निर्माण करते हैं जिस का बृहद् रूप है राष्ट्र जिसका अंग्रेजी पर्याय है Nation.

भौगोलिक दृष्टि से प्रत्येक राष्ट्र की पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण की सीमाएं तो निर्धारित रहती हैं परन्तु विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं इत्यादि का प्रतिनिधित्व करने वाले जन मानस के बिना उन सीमाओं की क्या सार्थकता है– इन के बिना राष्ट्र राष्ट्र नहीं कहलाता वैसे ही जैसे 'होम' और 'हाउस' में अन्तर होता है।

राष्ट्र की परिभाषा कुछ विचारकों ने इस प्रकार दी है:– योगी अरविन्द के शब्दों में "भारत माता जमीन का एक टुकड़ा मात्र नहीं है, वह शक्ति है, ईश्वरत्व है"। एक अन्य विचारक के अनुसार "मनुष्य की तरह राष्ट्र का भी रूप आकार होता है। रूप दिखाई पड़ता है, स्वरूप अदृश्य होता है। धरती, आबादी, सामाजिक आधार, नीति–नियम, राज्य–व्यवस्था, संविधान आदि राष्ट्र का रूप है"।

वैदिक काल से ही भारतवासियों की यही कामना रही है कि **"वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहितः"**।

भारत को विश्व का प्राचीनतम राष्ट्र माना जाता है क्योंकि उसी ने तो समस्त सृष्टि के कण–कण में देवत्व के दर्शन किए हैं 'ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्' इसलिए 'राष्ट्र देवो भव' संज्ञान उसे क्यों न दिया जाए। उपरोक्त आलेख में 'मातृ देवो भव' सर्व प्रथम कहा गया है। हम अपनी भारत–भू को भी 'मातृ–भूमि' कह कर ही प्रणाम करते हैं। 'माता–भूमिः पुत्रो ऽहं पृथिव्याः' कितना पवित्र और मर्म–स्पर्शी वाक्य है। पुत्र का अपनी माता के प्रति जो दायित्व और कर्त्तव्य है। उसका अनूठा उदाहरण राम और कौशल्या को छोड़ और कहाँ मिलेगा।

यही भावना राष्ट्र के प्रति उसके सपूतों की भी होनी चाहिए ताकि वे गर्व और स्वाभिमान से उच्च स्वर में कह सकें 'वन्दे–मातरम्'। 'भर्गो देवस्य धीमहि' प्रणव (अर्थात् गायत्री) मंत्र में इन तीन शब्दों का उच्चारण भी किया जाता है अर्थात् हम आपके इस वरणीय (पूजनीय) पाप–ताप विनाशक विज्ञान स्वरूप का ध्यान करते हैं।

क्या इसी भावना के अनुरूप 'राष्ट्रं परं धीमहि' नहीं कहा जा सकता। जैसे 'स्व' की तुलना में 'पर' महत्वपूर्ण है उसी प्रकार 'निज' से अधिक 'राष्ट्र' की गरिमा है। राष्ट्र है तो मैं हूँ, मेरे कारण राष्ट्र ऐसा नहीं है। भारत (भा+रत = जो प्रकाश ही प्रकाश बिखेरता है, जिसका दर्शन है तमसो माँ ज्योतिर्गमय) देश है तभी तो मेरा अस्तित्व है। मैं गर्व से अपने आपको भारतीय कह सकता हूँ, मेरे कारण भारत का वर्चस्व है, ऐसी सोच में शायद कहीं अहं की बू आ सकती है। अतएव उसी (भारत) राष्ट्र के प्रति मैं वैसे ही नतमस्तक होता हूँ जैसे किसी देवालय में जाकर किसी देवता के सामने। तभी तो 'राष्ट्रदेवो भव'।

यजुर्वेद के 31वें अध्याय के 'पुरुष सूक्त' में इस सम्बन्ध में बड़ा ही सार्थक सार प्रस्तुत किया गया है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रोऽजायत।।

अर्थात् राष्ट्र देव का मुख है ब्राह्मण, भुजाएँ हैं क्षत्रिय, जंघाएँ हैं वैश्य और पैर हैं सेवक के रूप में शूद्र। देवालय में जब प्रतिमा प्रतिष्ठान होता है तो उसके इन सभी अंगों को संवारा जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार चार वर्णों से निर्मित इस राष्ट्र का शरीर के अंगों से कितना सटीक रूपक प्रस्तुत किया गया है।

ब्राह्मण राष्ट्र की मेधा (या मेधां देवगणः पितरश्च उपासते) BRAIN का, क्षत्रिय बाहुबल का – MIGHT OF AIR, LAND & SEA: शक्ति का, वैश्य COMMERCE ACUMEN OR ECONOMY का और शूद्र तीनों वर्गों की सेवा का भार वहन करने वाला प्रतीक है। ध्यान रहे इस अन्तिम वर्ण को निकृष्ट नहीं समझना चाहिए क्योंकि इसके बिना राष्ट्र ही पंगु बन जाएगा। शायद इसी कारण दूरद्रष्टा महर्षि स्वामी दयानन्द ने 'स्त्री शूद्रौ ना धीयाताम्' के विरोध में समाज के ठेकेदारों को कड़ी फटकार लगाई थी। फलस्वरूप इन दोनों वर्णों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में उन्होंने कार्यितृ भूमिका निभाई थी।

यदि ये चारों वर्ण और उनके प्रतीक अपनी–अपनी जगह सुदृढ़ और स्वस्थ रहेंगे तो उस राष्ट्र की ओर कोई कुदृष्टि नहीं रख सकेगा। शायद यही कारण है कि जब भी किसी आक्रान्ता ने हमारे राष्ट्र पर आक्रमण करने का दुस्साहस किया सबने एक जुट होकर उस शत्रु को नाकों चने चबवाये। इस पृष्ठ भूमि में मैं संगठन–सूक्त के इस अंश को उद्धृत करने का मोह संवरण नहीं कर सकता–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानानां उपासते।।

अपने इसी संगठन की शक्ति समवेत स्वर लहरी से ही अपने पूर्वजों की भांति देश–वासियों ने, इतिहास गवाह है, शत्रुओं को खदेड़ने का प्रयास किया है और सफलता भी पाई है। यही राष्ट्र–देवता की उपासना है।

यजुर्वेद में राष्ट्रीय वन्दन का एक वैदिक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है जिसे कण्ठस्थ कर उस पर मनन करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है:

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।

आराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम

दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णुरथेष्ठा

सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्

निकामे–निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः

पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।। यजु.अ. 221 मंत्र 22

हिन्दी में भावानुवाद इस प्रकार है:

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरि–दल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें।
फल–फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।।
हो योगक्षेम–कारी, स्वाधीनता हमारी।।

अर्थात् ब्राह्मण (National Brain) तेजस्वी हों; क्षत्रिय (National Forces) महाबलशाली हों; गौ (माता) की रक्षा हो, नारी–वर्ग का सम्मान हो क्योंकि वे ही किसी बलवान सन्तान को जन्म देकर राष्ट्र की रक्षा करने वाली हैं। पर्जन्य (इन्द्र) इच्छानुसार वर्षा करें ताकि न सूखा पड़े न बाढ़ का प्रकोप हो और सभी ओर Environment का भी पूरा ध्यान रखा जाए। अभिप्राय यह है कि राष्ट्रीय अस्मिता योगक्षेम कारी हो– योग (अप्राप्तस्य प्राप्तिः) और क्षेम (प्राप्तस्य रक्षणम्)। राष्ट्र के प्रति ऐसी दिव्य कल्पना वैदिक (भारतीय) संस्कृति को छोड़ और कहाँ देखी जा सकती है।

आर्य संस्कृति का लक्ष्य वाक्य सदा रही रहा है:

'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'

बस यहीं से 'राष्ट्रदेवो भव' का उदात्त चिन्तन प्रस्फुटित होता है।

तो आइए! इस दिश्म में
हम करें राष्ट्र अमरदान, हम करें राष्ट्र आराधन
तन से, मन से, धन से, तन–मन–धन जीवन से
हम करें राष्ट्र अभिन्दन

'वरेण्यम्' ए–1055,
सुशान्त लोक–1
गुरुग्राम–122001

www.thearyasamaj.org

संस्कृत वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण परक अनुसन्धान

● आचार्य सोमेन्द्र

या त्येकतोऽस्त शिखरं पतिरोषधीनां
माविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।। 4/2

"अभिज्ञान शाकुन्तलम्"

प्रोफेसर माइकल पोर्टर का कहना है कि **"सम्भावना पूर्ण कारण पैदा किए जाते हैं, विरासत में नहीं मिलते। अर्थात्** किसी भी समस्या का समाधान खोजने की आवश्यकता पड़ती है। वह अपने आप नहीं सुलझती। वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण है जिससे भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व त्रस्त है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन संपूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है जो मानव जगत को परावृत करती हैं। हमारे चारों ओर जो विराट प्राकृतिक परिवेश व्याप्त है उसे ही हम पर्यावरण कहते हैं। परस्परावलंबी संबंध का नाम पर्यावरण है। हमारे चारों ओर जो भी वस्तुएँ, परिस्थितियाँ एवं शक्तियाँ विद्यमान हैं, वे सब हमारे क्रियाकलापों को प्रभावित करती हैं। और उनके लिए एक दायरा सुनिश्चित करती हैं। इसी दायरे को हम पर्यावरण कहते हैं। यह दायरा व्यक्ति, गाँव, नगर, प्रदेश, महाद्वीप, विश्व अथवा सम्पूर्ण सौरमंडल या ब्रह्मांड हो सकता है। **सर्वप्रथम डॉ. रघुवीर** ने तकनीकी शब्द कोष निर्माण के समय "इन्वायरन्मेंट" (फ्रेंच भौतिक शब्द) के लिए पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया था। वे ही इसके प्रथम "शब्द प्रयोक्ता" है। वास्तव में पर्यावरण या इन्वायरन्मेंट शब्द अत्यधिक प्राचीन शब्द नहीं है। जर्मन जीव वैज्ञानिक अर्नेस्ट हीकल द्वारा "इकोलॉजी" शब्द का प्रयोग सन् 1869 में किया गया जो ग्रीक भाषा के आईकोस (ग्रह या वास स्थान) शब्द से उद्धृत है। यही शब्द पारिस्थितिकी के अंग्रेज़ी पर्याय के रूप में इन्वायरन्मेंट शब्द से प्रचलित हुआ है। इन्वायरन्मेंट शब्द का प्रयोग, ऐसी क्रिया जो घेरने के भाव को सूचित करने के संदर्भ में किया जाता है। विभिन्न कोशों में इसके विभिन्न अर्थ दिए गए हैं। जैसे वातावरण उपाधि, परिसर, परिस्थिति, प्रभाव, प्रतिवेश, परिवर्त तथा वायुमण्डल, वातावरण और परिवेश। संस्कृत वाङ्मय में जहाँ मानव जाति के लिए आयुर्वेद, धर्मनीति, राजनीति, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, आदि का विशद् वर्णन है वहीं पर पर्यावरण को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसीलिए वेदकालीन मनीषियों ने द्युलोक से लेकर व्यक्ति तक समस्त परिवेश के लिए शांति की प्रार्थना की है। वैदिक काल से आज तक चिंतकों और मनीषियों द्वारा समय-समय पर पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता को अभिव्यक्त कर मानव जाति को सचेष्ट करने के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया गया है। पर्यावरण का स्वच्छ एवं संतुलित होना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता को यह तथ्य बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में समझ में आया है जबकि भारतीय मनीषियों ने इसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था। हमारे ऋषि मुनि जानते थे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष तथा वायु इन पंचतत्वों से ही मानव शरीर निर्मित है।

"पंचस्वन्तु पुरुष आविवेशतान्मन्तः पुरुषे आर्पेतानि"-23-25

उन्हें इस तथ्य का भाव था कि यदि इन पंचतत्वों में से एक भी दूषित हो गया तो उसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है।

इसीलिए उन्होंने इसके संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक धार्मिक कृत्य करते समय लोगों से प्रकृति के समस्त अंगों को साम्यावस्था में बनाए रखने की शपथ दिलाने का प्रावधान किया था जो कि आज भी प्रचलित है।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्ति राप: शान्तिरोषधयः शान्ति।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्ति र्ब्रह्म शान्ति
सर्वशान्ति देव शान्तिः सामा शान्तिरोधि।। 36.17।।

यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करते हुए मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन में अनुस्यूत एकता का दर्शन बहुत पहले कर चुका था। ऋग्वेद का नदी सूक्त एवं पृथिवी सूक्त तथा अथर्ववेद का अरण्यानी सूक्त क्रमशः नदियों, पृथ्वी एवं वनस्पतियों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देते हैं। भारतीय दृष्टि चिरकाल से सम्पूर्ण प्राणियों एवं वनस्पतियों के कल्याण की आकांक्षा रखती आई है। "यद्पिण्डे तद्ब्रह्मण्डे" सूक्ति पुरुष तथा प्रकृति के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध की विज्ञान सम्मत अवधारणा को बताती है। स्वच्छ जल एवं स्वच्छ परिवेश किसी भी सामाजिक वातावरण के पल्लवन एवं विकसन की अपरिहार्य आवश्यकता है। जीव-जन्तुओं हेतु अनुकूल परिस्थितियों में ही जीव-जन्तुओं का समाज पुष्पित-पल्लवित होता है। अतः सामाजिक विकास में पर्यावरण तथा जल संरक्षण की अनिवार्यता को विस्तृत नहीं किया जा सकता है।

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण पर विशेष चर्चा की गयी है। अथर्ववेद में कहा गया है कि अग्नि (यज्ञाग्नि) से धूम उत्पन्न होता है। धूम से बादल बनते हैं और बादल से वर्षा होती है। वेदों में यज्ञ का अर्थ "प्राकृतिक चक्र को सन्तुलित करने की प्रक्रिया" कहा गया है। वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि यज्ञ द्वारा वातावरण में ऑक्सीजन तथा कार्बनडाईऑक्साईड का सही सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। अतः यह तथ्य भी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है। वेदों तथा वेदांगों में अनेक स्थलों पर यज्ञ द्वारा वर्षा के उदाहरण मिलते हैं। यास्कीय निघण्टु में वन का अर्थ जल तथा सूर्य किरण एवं पति का अर्थ स्वामी माना गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषि इस विज्ञान समस्त धारणा से अवगत थे कि वन ही अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से उनकी रक्षा कर सकते हैं। इसीलिए ऋग्वेद में वनस्पतियों को लगाकर वन्य क्षेत्र को बढ़ाने की बात कही गयी है। सम्भवतः इसी कारण से उन्होंने वन्य क्षेत्र को "अरण्य" अर्थात् रण से मुक्त या शान्ति क्षेत्र घोषित किया होगा ताकि वनस्पतियों को युद्ध की विभीषिका से नष्ट से होने से बचाया जा सके।

सृष्टि की उत्पत्ति और जगत का विकास ही पर्यावरण प्रादुर्भाव है। सृष्टि का जो प्रयोजन है वही पर्यावरण का भी है। जीवन और पर्यावरण का अन्योन्य संबंध है। इसीलिए आदिकाल से मानव पर्यावरण के प्रति जागरुक रहा है। ताकि मानव दीर्घायुष्य, सुस्वास्थ्य, जीवन शक्ति, पशु, कीर्ति, धन एवं विज्ञान को उपलब्ध हो सके। यही कामना अथर्ववेद का ऋषि "आयुः प्राणं प्रणां पशु व शत जीव शरदो करता है। ऋग्वेद मे ऋषि "शतं जीवतु शरदः...... तथा यजुर्वेद में ऋषि "शतिमिन्नुशरदो अति....तथा वह ऋषि का आशीर्वाद पाता है कि हे मनुष्य! बढ़ता हुआ तू सौ शरद ऋतु और सौ बसंत तक जीवित रहे। इंद्र (विद्युत) अग्नि, सविता (सूर्य), वृहस्पति (संकल्प शक्ति) और यज्ञ तुझे सौ वर्ष तक आयुष्य प्रदान करें-वैदिक साहित्य में प्राकृतिक पदार्थों से कल्पाण की कामना को स्वस्ति कहा गया है। इस पर आचार्य सायण एवं नैरुक्त चिंतन है कि अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति "योग" है एवं प्राप्ति का संरक्षण "क्षेम" है। पर्यावरण के संतुलन में वृक्षों के महान योगदान एवं भूमिका को स्वीकार करते हुए ऋषि मुनियों ने बहुत चिंतन किया है। मत्स्य पुराण में उनके महत्व एवं महात्म्य को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि दस कुंओं के बराबर एक बावड़ी होती है। दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

यदि हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो हमें प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग संस्कृत वाङ्मय के दिये निर्देशानुसार ही करना होगा। पर्यावरण के विषय में महर्षि यास्क ने जो कहा है वह सर्वमान्य है। यास्क ने अपने निरुक्त में वस्तु या भाव के छह विकार गिनाए हैं। उनमें पर्यावरण के सम्बन्ध में अस्ति या सत्ता शब्द चिंतनीय है। इसकी व्याख्या में वे कहते हैं कि "कोई वस्तु तभी तक अपनी सत्ता बनाए रख सकती है जब तक वह स्वयं को धारण करने में समर्थ है। जब उसमें बाहर हस्तद्वीप अधिक होता है अथवा उसकी नैसर्गिक संरचना विकृत होती है तो उसकी आत्म धारणा शक्ति नष्ट हो जाती है। यही उसका प्रदूषण है"। वस्तु के निर्माण का जो अनुपात है वह स्थित रहना चाहिए। अनुपात भंग हुआ और वस्तु में स्वास्थ्य का विनष्ट होना ही प्रदूषण है। संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण सुरक्षा हेतु स्पष्ट संदेश दिया गया है। अथर्ववेद में भूमि की हरेपन से रक्षा करने का जो संदेश है उसके द्वारा दो बातें कही गयी हैं।

प्रथम तो यह कि पर्यावरण तथा प्राणियों की रक्षा पृथ्वी में हरियाली के माध्यम से होती है। द्वितीय यह कि भूमि भी पेड़-पौधों की हरीतिमा से सुरक्षित रहती है। इसलिए भूमि को प्रदूषण से बचाए रखने के लिए न केवल हरियाली के प्रभाव को समझना होगा अपितु सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाकर धरती पर हरियाली का हर संभव प्रयास करना होगा। यही कारण है कि हमारे चिंतक मनीषियों ने वृक्षों एवं वनों की रक्षा करने वालों का विशेष सम्मान करने तथा उन्हें सतत् अन्न-धन देते रहने का संदेश दिया है। संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए संस्कृत लेखकों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति प्रेम को प्रदर्शित किया है। उन्होंने अपने भावों को पात्रों के माध्यम से भाई-बहन जैसा प्रेम व माता जैसा वात्सल्य दिखाया है। महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति का वर्णन करते हुए उसकी नायिका शकुन्तला को प्रकृति की पुत्री के समान दिखाया है। जिसकी गोद में पलकर शकुन्तला बड़ी हुई है। पुत्री की विदाई के समय प्रकृति का रूप एक माता के समान दिखाया है।

उ गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मु चन्त्यश्रूणीव लताः।।
4/12।। अभिज्ञान शाकुन्तलम्

महाकवि कालिदास द्वारा प्राणियों के प्रति चेतन मानव की आत्मीयता का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है।

धूमज्योतिः सलिलमरुता सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् ग्रह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।
पूर्वमेघ 5।।

इतना ही नहीं पुत्री को पति के घर जाना

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द गायत्री कथा

प्रबल हो, श्रद्धा जितनी सशक्त हो, विश्वास जितना दृढ़ हो, उतना ही आहुतियों का रूप शक्तिशाली होता है।" इसलिए पूर्वजों की आज्ञा है– "प्रातः–सायं, दोनों काल यज्ञ करो। संन्यासाश्रम के अतिरिक्त प्रत्येक आश्रम में करो, जिसे कि आहुतियों का वह दूसरा रूप अधिक–से–अधिक मात्रा में एकत्रित हो सके।"

एक वेद–मन्त्र सुनिये! यज्ञ करने वाला यज्ञ को सम्बोधित करके कहता है– "हे यज्ञ! जो आहुतियाँ मैं तेरे मुख में देता हूँ उन्हें स्वीकार कर! यज्ञ के देवता, तुम्हें इन्हें स्वीकार करो! हमारे लिए सुखदायी बनो! तुम्हारी सुमति सीधी हमारी ओर आवे, जो समति रंक को भी मालामाल कर देनेवाली हो।" धन से केवल धन प्रदान करना ही नहीं, किन्तु बुद्धि, बल, शासन, स्वास्थ्य, कीर्ति, सब–कुछ प्रदान करना है; यज्ञ का वह लाभ, जिसका सम्बन्ध परलोक से भी है।

'यजुर्वेद' के द्वितीय अध्याय में स्पष्ट लिखा है कि यज्ञ से तीनों लोकों में कल्याण होता है। छन्द तीन हैं– जगती, त्रिष्टुप् और गायत्री। जगती छन्द या जगती लोक वे हैं, जिनके सम्बन्ध में हमें कोई बोध नहीं–बहुत ऊपर इन नक्षत्रों से परे; इन्हें स्वर्ग लोक भी कहते हैं। त्रिष्टुप् लोक वे हैं जिन्हें हम तारागण के रूप में देखते हैं–चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र इत्यादि; इन्हें भूमि–लोक भी कहा जाता है; और गायत्री छन्द और गायत्री लोक है यह पृथिवी; इसके पर्वत, नदियाँ, मैदान, क्षेत्र, जंगल, उद्यान, फल, फूल। इसे भूलोक भी कहा जाता है।

वेद कहता है– जो लोग यज्ञ करते हैं उनसे वैर करने वाला न तो कोई भूलोक में रहता है और न भुवःलोक में और न स्वःलोक में, न पृथिवी पर, न नक्षत्रगण में, न इनसे ऊपर और न परे। वेद के शब्द हैं– 'हे यज्ञ! जो हमसे वैर करते हैं। उनसे हम वैर करते हैं। तू उनका सबका नाश कर देता है।' यह अवस्था जब उत्पन्न हो जाए, जब कोई भी शत्रु न रहे, तब यह आत्मा उस महान् प्रकाश में प्रवेश करता है जिसमें केवल आनन्द ही आनन्द है जिसे भगवान् कहते हैं।

यह है यज्ञ का लाभ! लोक और परलोक, दोनों ही इससे सुधरते हैं तो सोने पर सुहागा हो जाता है।

गायत्री का अर्थ है वह मन्त्र जो गाने वाले का उद्धार करता है। प्रेम से, श्रद्धा से जो लोग गायत्री मन्त्र गाते हैं, उसका जाप करते हैं, वे पार अवश्य हो जाते हैं–इसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु अब समय हो गया है पूरा। गायत्री की बात अब आगामी व्याख्यान में कहूँगा।

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 08 का शेष

संस्कृत वाङ्मय के...

है इसलिए उसे आभूषण की आवश्यकता पड़ेगी। यही सोचते हुए प्रकृति माता ने अपनी पुत्री शकुन्तला को वह सब उपलब्ध कराया जो दुर्लभ था।

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर विशद् वर्णन है। उसमें बताये गये सूत्रों के आधार पर ही हम वर्तमान की सबसे भयावह समस्या से निपट सकते हैं। कुछ सराहनीय प्रयास इस ओर किये जा रहे हैं जैसे उत्तराखण्ड में 130 इन्फैंट्री बटालियन ने 5 जून यानी विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर "हरेला वीम" मनाते हुए महज 19 मिनट में 1 लाख से अधिक पौधे रोपे हैं जिसके बाद बटालियन की इस उपलब्धि को लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज किया गया है। इसी प्रकार राजस्थान के पिपलांत्री गाँव में बेटी पैदा होने पर गाँव में हर साल 111 पौधे लगाते हैं।

आज विश्व पटल पर पर्यावरण एक बड़ी समस्या बनकर उभरा है। विश्व के सभी देश कार्बन उत्सर्जन को लेकर चिन्तित हैं। विश्व के सभी देश इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान में 65 देश कार्बन उत्सर्जन के प्रति अपनी रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र संघ को सौंप चुके हैं। भारत ने भी 66वें देश के रूप में अपनी पर्यावरण व कार्बन उत्सर्जन रिपोर्ट यू.एन.ओ. को सौंप दी है। आज यह बड़ी खुशी की बात है की सम्पूर्ण देश पर्यावरण को लेकर सजग है तथा इसके सुधार के लिए सतत् प्रयासरत् है। संस्कृत वाङ्मय के परिपेक्ष्य में पर्यावरण परक अनुसन्धान की नितान्त आवश्यकता है। संस्कृत वाङ्मय के सभी ग्रन्थों में पर्यावरण का विस्तृत वर्णन है, बस आवश्यकता है उसको वर्तमान परिपेक्ष्य से जोड़ने की। भारतीय ग्रन्थों में पर्यावरण के साथ–साथ देश की भौगोलिक स्थिति का भी वर्णन किया गया है। अतः हमें इस पर गहनता से विचार करना होगा तथा संस्कृत वाङ्मय की सहायता से पर्यावरण में सुधार के लिए सतत् प्रयास करने होंगे।

ग्राम नित्यानन्दपुर, पोस्ट शाहजहांपुर, जिला–मेरठ
मो. 9410816724
Email : somandrashree@gmail.com

☞ पृष्ठ 05 का शेष

सृष्टि उत्पत्ति वेद एवं...

दूर है वह 19 मील प्रति सैकण्ड के वेग से हमसे दूर भाग रही है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि पृथ्वी फैल रही है तथा Big Bang Singularity के समय सब एक ही स्थान पर थे। फिर उसने सृष्टि उत्पत्ति का समय ज्ञात करने के लिए V=HR सूत्र दिया। सूत्र में V आकाश गंगा के हमसे दूर हटने की गति प्रति सैकण्ड और R आकाश गंगा की हमसे दूरी है! H हब्बल का कान्स्टेन्ट है। चूंकि समय निकालने के लिए दूरी में वेग का भाग देते हैं अर्थात् समय=दूरी/वेग =R/V। चूंकि हमें R और V का मान ज्ञात है तो इससे समय निकालना सरल हो गया! इसे हल करने पर लगभग 10 अरब वर्ष आता है। वैदिक वाङ्मय में वेद की उत्पत्ति जानने के लिए संकल्प मन्त्र को काम में लिया जाता है। संकल्प मन्त्र है **ओ३म् तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वि तीय पहरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तेरऽष्टाविंशतित मे कलियुगे कलि प्रथम चरणेऽ मुकसंवत्सरानर्तु मास पक्ष दिन नक्षत्र लग्न मुहूर्तेऽ वेदं कृतं क्रियतेच'**। इसमें अमुकसंवत्सर में कलियुग संवत् विक्रम संवत माह, पक्ष, नक्षत्र आदि जिस दिन संकल्प लिया जा रहा है के नाम व संवत की संख्या देना होता है। इस संकल्प मंत्र के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति को हुए छः मन्वन्तर, सत्ताइस चतुर्युगियों बाद अठ्ठाइसवीं चतुर्युगी के सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर के व्यतीत हो जाने के बाद कलियुग के 5117 वर्ष व्यतीत हो गए हैं। मनु स्मृति में काल की गणना करते समय बताया है कि सतयुग 1728000 वर्ष का त्रेतायुग 1296000 वर्ष, द्वापर 864000 वर्ष तथा कलियुग का मान 432000 वर्ष होता है। इन चारों युगों का योग 4320000 वर्ष एक चतुर्युगी कहलाता है। 71 चतुर्युगी अर्थात् 306720000 वर्ष का एक मन्वन्तर होता है।

इससे सृष्टि की आयु ज्ञात करते हैं–6 मन्वन्तर का काल=1840320000 वर्ष, 27 चतुर्युगियों का काल = 4320000×27=116640000 वर्ष, 28 चतुर्युगी का सतयुग 1728000 वर्ष, त्रेतायुग 1296000 वर्ष, द्वापर युग 864000 तथा कलियुग का काल 5117 वर्ष। इन सबका योग हुआ 1960853117 वर्ष। यह समय वेदों की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान काल तक का है। फिर शतपथ में कहा गया है–14 मन्वन्तर का काल=994, चतुर्युगी=4294080000 वर्ष जीवों का भुक्त भोग काल है और सृष्टि की कुल आयु 1000 चतुर्युगी वा 4320000000 वर्ष है।

स्वामी दयानन्द लिखते हैं **ते चैकस्मिन्ब्राह्म दिने 14 चतुर्दश भुक्त भोगाभवन्ति।**

एक सहस्त्रं 1000 चतुर्युगानि ब्राह्मदिनस्य परिमाणं भवति।।

सृष्टि काल 4320000000 वर्ष तथा भुक्त भोगकाल 4294080000 वर्ष का अन्तर 25920000 वर्ष सृष्टि उत्पत्ति का काल है। वर्तमान में जीव ने 1960853117 वर्ष भोग लिए हैं और 2333226883 वर्ष भोगना शेष है। दोनों का योग 4294080000 वर्ष आता है जो 14 मन्वन्तर के काल के बराबर है।

कुछ विद्वानों का कहना है कि सृष्टि की उत्पत्ति, मनुष्य की उत्पत्ति और वेद की उत्पत्ति एक साथ हुई है। इनका कहना है कि सृष्टि की आयु और 14 मन्वन्तरों के काल का अन्तर 25920000 वर्ष आता है। इसका समायोजन सूर्य सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक मन्वन्तर के पूर्व 1728000 वर्ष सन्धिकाल में रूप में जोड़ा जाना चाहिए और फिर शेष 1728000 वर्षों को सृष्टि के अन्त में जोड़ा जाना चाहिए। ये लोग सृष्टि की उत्पत्ति का कोई समय ही नहीं मानते हैं जब कि वेद का मानना है कि बिना काल लगे कोई भी कार्य हो जाय या नष्ट हो जाय यह कभी नहीं होता है। फिर सूर्य सिद्धान्त की मान्यता भी किसी आर्ष ग्रन्थ में नहीं दी गई। सृष्टि की आयु वर्तमान काल में 1960853117 वर्ष वेदोत्पत्ति काल +25920000 वर्ष सृष्टि उत्पत्ति काल = 1986773117 वर्ष है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति को मानते हैं। निमित्त कारण के रूप में ईश्वर और जीव को स्थान देते हैं। उनका कहना है कि प्रकृति परमाणु जिसको सब संसार को बनाने वाली सामग्री कहते हैं वह जड़ होने से अपने आप न बन और न बिगड़ सकती है किन्तु दूसरे के बनाने से बनती और बिगाड़ने से बिगड़ती है। कहीं–कहीं जड़ के निमित्त से जड़ बन और बिगड़ भी जाता है जैसे परमेश्वर के रचित बीज पृथ्वी में गिरने और जल पाने से वृक्षाकार हो जाते हैं और अग्नि आदि जड़ के संयोग से बिगड़ भी जाते हैं परन्तु इनका नियम पूर्वक बनना और बिगड़ना परमेश्वर और जीव के अधीन है। इन तीन कारणों के बिना कोई भी वस्तु न ही बन सकती और न ही बिगड़ सकती है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 8 वेद और विज्ञान दोनों का यह भी मानना है कि सृष्टि असीम है।

इति शम्।

दादा बाड़ी, (राजस्थान)

www.thearyasamaj.org

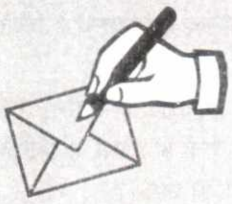

पत्र/कविता

देशवासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी

देश धर्म की भेंट चढ़ा दी, अपनी भरी जवानी।
देशवासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
राणा सांगा ने बाबर को, नाकों चने चबाए।
महाराणा प्रताप शिवाजी, मुगलों से टकराए।।
तेग बहादुर गोविंद सिंह ने, दुष्टों का मुंह मारा।
बंदा वैरागी नलवा को, मान गया जग सारा।।
दुर्गा रानी किरण मई थीं, देश भक्त क्षत्राणी।
देश वासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।2।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द ने, सोया देश जगाया।
आजादी का बिगुल बजाया, योगी न घबराया।।
ताँत्या टोपा तुलाराम, नाना को साथ लगाया।
बीर कुंवरसिंह नाहरसिंह ने, भारी युद्ध मचाया।।
लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ों से, खूब लड़ी मर्दानी।
देशवासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
वीर सुभाषचन्द्र ने था, गोरों का राज हिलाया।
भारत है वीरों की धरती, दुष्टों को दिखलाया।।
बिस्मिल शेखर भगतसिंह ने, भारी लड़ी लड़ाई।
खुदीराम अशफाक वीर ने, हँसकर फाँसी खाई।।
मत भूलो, लंदन में, ऊधम की पिस्तौल चलानी।
देशवासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
वीरों के बलिदानों से ही, यह आजादी आई।
भारत वीर सपूतों ने थी, कठिन मुसीबत पाई।।
आज़ादी का महत्व समझ लो, सभी बहिन अरु भाई।
मिलजुल कर के रहना सीखो, इसमें सभी भलाई।।
देश भक्त बलवान बनों तुम, सच्चे ईश्वर ध्यानी।
देशवासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।
बनो सदाचारी तपधारी, जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
गंदी संगति त्यागो प्यारो! जग में आदर पाओ।।
वैदिक धर्मी बनो, देश भारत की शान बढ़ाओ।
"नन्दलाल" तुम आज़ादी के, मधुर तराने गाओ।।
करो देश का ध्यान, छोड़ दो करनी तुम मनमानी।
देशवासियो! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।

पं. नन्दलाल निर्भय
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष 9813845774

ऋग्वेद भाष्य का निकाला था एक आदर्शाङ्क

ऋग्वेदभाष्य करने से पूर्व ऋषि ने एक आदर्शाङ्क प्रकाशित किया था। इसमें प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का सुविस्तृत वेदभाष्य और आर्यभाषा में अनुवाद भी था, साथ ही द्वितीय सूक्त का भी कुछ संस्कृतभाष्य था। इसमें प्रकाशित सभी मन्त्रों के व्यावहारिक (आधिभौतिक) तथा पारमार्थिक अर्थ किये गये थे। यह आदर्शाङ्क और पत्रिका रुप में छापे हुए वेदभाष्यों के कुछ अंश प्रतिमास ग्राहकों, विद्वानों और प्रसिद्ध संस्थाओं को भेजे जाते थे। जिन पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों के पास इन्हें भेजा जाता था उनमें मुख्य नाम हैं–प्रो. मोनियर विलियम्स, प्रो. मैक्समूलर, महादेव गोविन्द रानाडे, गोपाल राव हरिदेशमुख, पं. केशवचन्द्र सेन, सर टी. माधवराव, राजा जयकृष्णदास तथा महाराज होल्कर आदि।

डॉ. ज्वलन्त शास्त्री
'अग्निज्योति' चाणक्यपुरी
अमेठी
मो. 9415185521

****

मैं 'अडिग' जी को भूल नहीं सकता

एक दिन अचानक लगभग दो माह पूर्व कुछ अस्वस्थ से दीखने वाले एक वयोवृद्ध कुछ लड़खड़ाते हुए बेचैन से एक लेखक ने मेरे मुम्बई आवास में प्रवेश किया और एक छोटी सी परिचयात्मक टिप्पणी के साथ कहा कि वे ओम प्रकाश 'अडिग' हैं और शाहजहाँपुर में अपना लगभग सारा जीवन बिताने के बाद अब अपने पुत्र के साथ मुम्बई के उपनगर वाशी में रह रहे हैं। उन्होंने मेरे हाथ में स्नेह पॉकेट बुक्स, रोशनगंज शाहजहांपुर द्वारा 1978 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'क्वांरे गीत' और बाद की सन 2009 तक प्रकाशित हुई अन्य चार काव्य कृतियों, जिनमें 'सेकुलः युद्ध के बाद' व 'कल्पतरू' मुझे पढ़ने के लिए बिना किसी टिप्पणी के मेरे हाथ में थमा दीं। उनके मुख पर हताशा, थकान, समय की मंझधार में आत्मविश्वास हीन एक ऐसे व्यक्ति की कहानी झलक रही थी जो श्रेष्ठता की तलाश में असफल हो गया था। बात करने पर जब मुझे ज्ञात हुआ कि वे शाहजहांपुर की मिट्टी के रंग में रचे बसे वे पत्रकार थे जहाँ एक समय पचास के दशक में मैं भी मुमुक्षु आश्रम से निकलने वाले स्वामी शुकदेवानंद के संरक्षण में उस धार्मिक मासिक पत्र 'परमार्थ' में लिखता था जिसका सम्पादन वे स्वयं करते थे।

एक समय था कि गीता प्रेस, गोरखपुर के 'कल्याण' मासिक की तरह शाहजहांपुर के 'परमार्थ' का इसलिए भी देश भर में नाम था कि ऋषिकेश में गंगा के पार क्रमशः 'गीता भवन' व 'परमार्थ निकेतन' के भव्य परिसर थे और श्रद्धालुओं व पर्यटकों को उनके स्टीमर निःशुल्क रूप से उन्हें दोनों छोरों पर पहुंचाते थे। 'अडिग' जी के साथ कुछ मिनटों के वार्तालाप के बाद ही प्रतीत हुआ कि उनकी निश्छलता में एक वटवृक्ष के नीचे आराम से बैठने का सुख मिल रहा है। उन्हें इस बात की कोई शिकायत नहीं थी कि आज की पीढ़ी के पत्रकार अथवा युवा लेखक उन्हें उपेक्षित करें, भुलादें। उन्हें तो यह पीड़ा बेधती थी कि दशकों पहले समकालीन पत्रकारिता जगत् के सहयोगी जो आज भी टुकड़े–टुकड़े संघर्ष की छाया द्वारा अपने को स्थापित कर चुके हैं व आर्थिक रूप से सक्षम हैं वे उन्हें पहचानते भी नहीं हैं। शायद उनका स्वान्त सुखाय रचा काव्य आर्थिक रूप से इतना अनुपादेय और अक्षम रहा कि वे सांसारिकता की दृष्टि से भूल जाने योग्य ही बने रहे।

श्री ओम प्रकाश 'अडिग' जी का पूरा नाम ओमप्रकाश श्रीवास्तव था जिनका जन्म 7 अगस्त 1941 को रोशनगंज, शाहजहांपुर में हुआ था। उनके पिता श्री महादेव श्रीवास्तव (1915–1990) भी दीर्घजीवी अधिकारी पद पर थे जो स्थानीय प्रशासन में अपनी साफगोई व सादगी के लिए जाने जाते थे। एक समय 'अडिग' जी रक्षा मंत्रालय के स्थानीय संकुल में अधीक्षक थे जहां से सेवानिवृत्ति के बाद 'गांधी साप्ताहिक' (1950–1961) व 'हिन्दी गज़ट' का भी वे संपादन करते थे देश की लगभग सभी प्रख्यात प्रत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्रकाशित होती थीं। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर भी उन्हें काव्य पाठ के लिए बुलाया जाता था। कहानी, व्यंग्य एवं काव्य लेखन के क्षेत्र में वे लोकप्रिय थे। वे शाहजहांपुर में ही भुवनेश्वर शोध संस्थान के उपाध्यक्ष होने के साथ–साथ उनके सांस्कृतिक व साहित्यिक संगठनों से संलग्न रहे हैं। जब उन्होंने छह सभ्य शब्दों में 'प्रकाशनाधीन' कहकर मुझे पाण्डुलिपियाँ दिखलाईं जो प्रकाशित नहीं हो सकी थीं तब मुझे उनकी आंखों में हताशा मिश्रित करुणा भी दीख पड़ी।

जहां तक मैं निजी तौर पर इस बात को एक दैवी संयोग मानता हूं कि एक दूसरे से परिचित न होने पर भी ओम प्रकाश श्रीवास्तव 'अडिग' जी शाहजहांपुर में परमार्थ के अनेक अंकों में स्वामी शुकदेवानन्द के चिन्तन व विचारधारा पर धारावाहिक रूप से मेरे लेख या उस समय मेरे द्वारा छन्दबंद्ध 'विदुरनीति' के अनुवाद को शनैः–शनै अनेक पृष्ठों में क्रमशः महीनों तक छापते रहे। यहां तक कि मेरी मां के कुछ निजी संस्मरण जो स्वामी शुकदेवानन्द, पथिक जी व अन्य रामायण के वाचक जैसे रामकिंकर जी, कृपालुदास व बिन्दु जी से सम्बन्धित थे, वे छापते थे। यह संयोग विरलों के जीवन में हो सकता है इसलिए मैं 'अडिग' जी को भुला नहीं सकता हूँ।

हरिकृष्ण निगम
1802 ए, पंचशील हाईट्स, महावीर नगर,
कान्दिवली (प) मुम्बई–400067
मो. 9820215464

****

www.thearyasamaj.org

75 वें वर्ष में रुपये 76 हजार का दान

कई लोग अपनी 50वीं या 75वीं वर्षगाँठ अथवा विवाह की 25वीं या 50वीं वर्षगाँठ अनावश्यक खर्च करते हुए बड़ी टीमटाम से मनाते हैं। परंतु सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र) के प्रसिद्ध मुद्रितशोधक (हिंदी, मराठी, संस्कृत के प्रूफ रीडर), आर्य समाज रामनगर, लातूर के मंत्री तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित सदस्य पं ज्ञानकुमार आर्य ने अपनी आयु के 75 वें वर्ष में (2016 में) ऐसी फिजूलखर्ची न करते हुए प्रसिद्धि से दूर रहकर अपना दान सत्कार्य में लगाकर सामाजिक उत्तरदायित्व निभाया है।

उन्होंने यह राशि म. आ.प्र. सभा द्वारा मार्च, 16 में स्थापित 15 ज्येष्ठ आर्य सेवक गौरव स्थिर निधियों के लिए, आर्य समाज नेपाल के अन्तर्राष्ट्रीय महासंमेलन तथा भवन निर्माण के लिए, गुरुकुल केहलारी (खंडवा–म.प्र.) के 1 छात्र के भोजन खर्च तथा संगणक के लिए रुपये, आर्य समाज बिबराल तथा आ.स. बोटकूल, जि. लातूर के भवन निर्माण के लिए, आर्य समाज संभाजीनगर (महाराष्ट्र) के लिए,

श्री आर्य का देवऋण से उऋण होने का यह कार्य तथा यज्ञ के 'इदन्न मम' की त्यागभावना का आदर्श अन्यों की बहुत प्रशंसा की गई है।

योग-ध्यान, साधना शिविर

एक विज्ञप्ति के अनुसार आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनाँक 9 से 6 अप्रैल–2017 तक निःशुल्क योग–ध्यान–साधना शिविर लगाया जायेगा शिविर में अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएँगे तथा उपनिषद्–पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित ब्र.सत्यप्रकाश नैष्ठिक जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रम्हत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण–यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788 व 09941919851 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोहपूर्वक संपन्न हुआ। मुख्य वैदिक प्रवक्ता डॉ. जयेन्द्र शास्त्री एवं आचार्य आर्य सुखदेव तपस्वी जी ने अपने दार्शनिक एवं ओजस्वी प्रवचनों में कहा कि हर एक व्यक्ति यदि अपने दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को त्याग दे तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महान व्यक्ति बन सकता है। जब वे स्वामी दयानन्द जी के सम्पर्क में आये तो उन्होंने सभी दुर्व्यसनों को त्यागा और वेद के प्रचार और प्रसार करने में जुट गये। विद्वान् वक्ताओं ने स्वामी जी के जीवन का परिचय देते हुए उनके कार्यों पर प्रकाश डाला।

दोनों आमन्त्रित विद्वानों ने संदेश दिया कि वायु में प्रदूषण खत्म करने के लिए, प्रत्येक परिवार में यज्ञ होना चाहिए। उन्होंने आह्वान किया कि हमें वेदों की ओर मुड़ना चाहिए। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है। हमें उसी की पूजा करनी चाहिए।

आचार्य श्री ओमप्रकाश शास्त्री जी ने वैदिक मन्त्रों द्वारा यज्ञ पूर्ण किया। आचार्य नरेश दत्त जी ने मनमोहक तथा क्रान्तिकारी भजनों द्वारा उपस्थित जन मानस का मन मोह लिया। श्रीमती अल्का आहूजा एवं श्रीमती सुमित्रा दूहन ने आर्य समाज के भजनों द्वारा समा बाँध दिया। मुख्य अतिथि श्री चन्दपाल आर्य एवं श्रीमती सुनीता आर्या ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। विशिष्ट अतिथि श्रीमति एवं श्री रमेश बंसल जी रहे। सम्मानित अतिथि के तौर पर श्री ईश्वर आर्य अध्यक्ष वेदायन एवं श्रीमति सुषमा आर्या योगशिक्षिका वेदायन अपनी उपस्थिति दी।

समारोहोपरांत वेदायन की ओर से आयोजित ऋषिलंगर को सभी आर्यजनों ने प्रसाद रूप में ग्रहण किया।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. सैक्टर-14 गुरुग्राम...

क्रियाओं के महत्व को उजागर किया।

मुख्य अतिथि श्री टी.एल. सत्यप्रकाश जी ने जीवंत उदाहरणों के माध्यम से सामुदायिक भावना को सिंचित तथा पोषित करके, अपने तथा अपने देश को विशिष्ट बनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि सफलता पर गर्व, असफलता के लिए क्षमा याचना का भाव तथा अभिभावकों का सकारात्मक सहयोग युवाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

श्री प्रबोध महाजन जी ने कहा कि डी. ए.वी. का उद्देश्य बच्चों का चरित्रोत्थान करके अच्छा इंसान बनाना है। उन्होंने अभिभावकों से अनुरोध किया कि वह बच्चों के आहार, व्यवहार तथा विचार में जीवन मूल्यों को समावेशित करके आधुनिक परिवेश में उत्पन्न बुराइयों को समझने तथा उनसे बचने में सक्षम बनाएँ। कार्यक्रम के अगले दौर में विद्यालय की पत्रिका 'शुभा' का विमोचन किया गया।

छात्रों द्वारा विविध भारतीय तथा पाश्चात्य वाद्यंत्रों के समागम द्वारा उत्पन्न ध्वनियों ने समस्त परिवेश को संगीतमय पर दिया। भारतीय शास्त्रीय नृत्य, कथक द्वारा छात्राओं ने 'गुरु वंदना' करते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विद्यालय के युवाओं ने शेक्सपियर की 400वीं पुण्यतिथि पर उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' के एक अंश का मंचन करके बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। रियो ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली शिवानी कटारिया, सिंह आदि प्रतिभाशाली उभरते सितारों का माननीय अतिथि महोदय द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'आत्ममंथन' नृत्य नाटिका रही जिसमें आत्मा का नकारात्मकता से सकारात्मकता तक का सफर प्रस्तुत करते हुए मानव द्वारा शुभता को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। अंततः राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

कैसे खुल गई इस्लामिक बैंक की शाखायें

मोदी ने सउदी अरब के उपरोक्त इस्लामिक डवलमैंट बैंक की पहली शाखा गुजरात में खोलने की स्वीकृति दे दी है जो विचारणीय है। कांग्रेस ने इस बैंक की शाखा खोलने की अनुमति नहीं दी थी जबकि वह तुष्टीकरणवादी है। यह बैंक इस्लामी सिद्धान्तों पर चलता है। यदि यह बैंक खुल गया तो देश में दोहरी बैकिंग प्रणाली हो जाएगी और विचित्र स्थिति बनेगी।

दूरदर्शन पर भाजपा के मुस्लिम प्रवक्ता ने नवम्बर में कहा था कि यह बैंक संविधान में संशोधन करने के बाद ही खोला जा सकता है फिर अनुमति क्यों और कैसे दे दी गयी। रिजर्व बैंक साधारण बैंकों में इसकी खिड़की खुलवाने की तैय्यारी कर रहा है। ऐसा लगता है कि रिजर्व बैंक के प्रबन्धकों पर मुस्लिमों का दबाव और प्रभाव चलने लगा है। ज्ञात हुआ है कि केरल राज्य में कई नगरों में कई इस्लामी बैंकों की शाखाएँ चल रही हैं। यह शाखाएँ कैसे खुल गई हैं? जो कि अवैधानिक हैं। इन्हें बन्द कराने के लिए आवश्यक कार्रवाई शीघ्र की जानी चाहिए।

– आई. डी. गुलाटी,
प्रचार सभा, बुलन्दशहर, मो. 08958778443

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 18/19-01-2017
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. फिरोज़पुर में स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्मरण किया गया

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोज़पुर कैंट में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय मैनेजिंग कमेटी के उपप्रधान पंडित सतीश शर्मा जी मुख्यतिथि के रूप में उपस्थित हुए। यज्ञ का संचालन आचार्य देव राज द्वारा किया गया।

अनुष्ठान का आरंम्भ 'ओ३म्' ध्वनि के साथ गायत्री मन्त्र के उच्चारण से किया गया। हवन मन्त्रों से आहुतियाँ डाली गईं। जिससे वहाँ उपस्थित शिक्षकगण एवम् छात्राएँ मन्त्र मुग्ध हो गए और वातावरण सामाग्री की महक से सुंगधित हो उठा।

पूर्णाहुति के उपरान्त श्री मान सतीश शर्मा जी ने वहाँ उपस्थित सभी को सम्बोधित करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला और दैनिक जीवन में नित्य हवन और गायत्री मंत्र के महत्व को प्रतिपादित किया। अपने वक्तव्य के अन्त में छात्राओं को उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएँ भी दीं। प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा ने छात्राओं के समक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के प्रति अपने विचार प्रकट किये और उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर एक श्रेष्ठ नागरिक बन कर्तव्य पालन का सन्देश दिया तथा आशीर्वचन के साथ आगामी परीक्षाओं हेतु वचन कहे। कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ द्वारा हुआ और प्रसाद वितरण किया गया।

बी.बी.के. डी.ए.वी. ने 'ऑल इण्डिया इंटरवर्सिटी जूडो चैम्पियनशिप' में जीते पदक

बी.के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर की सुश्री नवनीत कौर और सुश्री नवरूप कौर ने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा में आयोजित हुई 'ऑल इण्डिया इंटरवर्सिटी जूडो चैम्पियनशिप' में क्रमशः एक स्वर्ण पदक और एक कांस्य पदक जीता। नवरूप कौर ने जूनियर एशिया कप 2015 में भारत टीम का प्रतिनिधित्व भी किया था।

प्राचार्या डॉ. पुषिपंदर वालिया ने इन युवा खिलाड़िनों को हार्दिक बधाई दी और उन्हें भविष्य में भी शानदार प्रदर्शन करने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की सत्प्रेरणा का फल है कि छात्रायें इस प्रकार की उपलब्धियों नारी सम्मान का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

श्री सुदर्शन कपूर, अध्यक्ष, स्थानीय प्रबंधकर्त्री समिति, प्रो. सतिंदर सिंह, पूर्व प्रो उपकुलपति जी.एन.डी.यू, अमृतसर और कॉलेज की प्रो. स्वीटी बाला, अध्यक्ष शारीरिक शिक्षा विभाग सहित अन्य फैकल्टी सदस्यों ने भी उपलब्धि प्राप्तकर्त्ताओं को शुभकामनाएँ दीं।

आर्य समाज भिलाई, सेक्टर-6, का 57वाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज भिलाई, सेक्टर-6, भिलाई का त्रिदिवसीय 57 वाँ वार्षिकोत्सव को ऋग्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के साथ संपन्न हुआ।

गुरुकुल आमसेना से आए स्वामी धर्मानंद सरस्वती, छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशु देव जी, होशंगाबाद से पधारे यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी तथा फरीदाबाद से आए भजनोपदेशक पं. प्रदीप शास्त्री ने इस उत्सव में उपस्थिति दर्ज की।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर एक कार्यक्रम सियान सदन नेहरु नगर में आयोजित किया गया जिसमें योगेन्द्र याज्ञिक ने भारतीयों को अपनी भारतीयता पर गर्व करने हेतु प्रेरित किया तथा भारतीय नाम, वस्त्रों, भोजन तथा संगीत की विशेषता बताते हुए उन पर गर्व करने को कहा। उन्होंने ऋषि दयानंद की प्राचीन भारत से लेकर वर्तमान काल तक की प्रासंगिकता बताई।

शालेय बच्चों के लिए "वैदिक धर्म एवं आर्य समाज" विषय पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें 'डी.ए.वी.' विषय पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें डी.ए.वी. तथा आर्य समाज से संबंधित 11 स्कूलों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को पुरस्कृत किया गया।

अंतिम दिवस यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी ऋग्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति संपन्न कराई। इसमें भारी संख्या में जन समुदाय ने "स्वाहा" के उच्चारण के साथ अपने इष्ट सुखों की प्राप्ति हेतु हवन में आहुति प्रदान की। आचार्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि केवल आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश ऐसा ग्रंथ है जो जन्म से लेकर जीवन के सभी चरणों को सही रूप से जीने की विद्या सिखाता है।

छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी ने वेद मंत्रों की व्याख्या पर बल दिया और उन्होंने कुछ वेद मंत्रों की व्याख्या की, फरीदाबाद से पधारे भजनोपदेशक पं. प्रदीप शास्त्री ने अपने भजनों में ऋषि दयानंद की महिमा का बखान किया। स्वामी धर्मानंद सरस्वती ने अपने आशीर्वचन में कहा कि हिन्दु समाज की बढ़ोतरी के लिए उसमें उपस्थित छूआ-छूत को मिटाना बहुत आवश्यक है।

गुरुकुल आम सेना से आए ब्रह्मचारियों द्वारा योग एवं व्यायाम प्रदर्शन किया गया। इसक अलावा लाठी चालन भाला चालन व तीर अंदाजी का भी प्रदर्शन किया गया। उपस्थित जन समुदाय ने तालियाँ बजा कर उनका उत्साह वर्धन किया।

अंत में ऋषिलंगर में भक्तजनों ने प्रसाद ग्रहण किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए एस.के शर्मा द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक - पूनम सूरी